टेन्टमेकर्स मैन्युअल

प्रस्तुतकर्ता:
इन्टरनैशनल डिसाइपलशिप अॅड्वान्स्मेन्ट तथा
एजुकेशनल रिसोर्सेस

हिन्दी अनुवाद:
शान्ति रावटे

नाम: ----------

स्थान: ----------

कैम्प: ----------

दिनांक: ----------

TENT MAKER'S MANUAL

Presented by:
Association for International Discipleship Advancement
(AIDA)
in collaboration with Educational Resources

Hindi Translation:
Shanti Rawate

Copyright © Association for International Discipleship Advancement, (AIDA), New Delhi, India

First Edition - 2009 - For "Gospel in the Whole World" Youth Conference, Nagpur
Second Edition - 2010 - For GC³ [Great Commission Challenge Camps]

NOT FOR SALE:
FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

टेन्टमेकर्स मैन्युअल

विषय सूची

1. जीसी^{3} – महान आदेश चुनौती शिविर – 5
2. महान आदेश के लिए नवयुवक – 8
3. 'टेन्टमेकर्स मैन्युअल' को उपयोग में लाने के लिये मार्गदर्शन – 11
4. मिशनरी का चरित्र – 15
5. पहले, दौरान तथा बाद में – 19
6. सामान्य तौर पर लोगों तक पहुंचना – 21
7. सुसमाचार-प्रचार/ई. आर. की कार्य-योजना – 23
8. शिष्य बनाओ – 25
9. संशोधित एन्गल् स्केल् – 27
10. मसीह में – 29
11. जीववाद: एक परिचय – 32
12. बौद्ध धर्म: एक परिचय – 35
13. हिन्दू धर्म: एक परिचय – 38
14. इस्लाम धर्म: एक परिचय – 41
15. सताव का सामना कैसे करें – 45
16. कार्य-योजना – 47
17. वेबसाइटस्, पुस्तकें और बाइबल वचन – 49

सेमिनार: आत्मा बचाने के सात कदम – 51

प्रस्तावना – पुस्तक तथा एक विशेष पुस्तक – 52
कदम 1 – आत्मा-जीतने के लिए तर्क – 54
कदम 2 – गवाही कैसे दें – 56
कदम 3 – चार आत्मिक नियम – 58
कदम 4 – उद्धार का रोमी रास्ता – 59
कदम 5 – पांच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार – 60
कदम 6 – रेखांकित किया हुआ नया नियम – 62
कदम 7 – शब्द-रहित पुस्तक – 63

परमेश्वर की इच्छा है कि हमारा एक विश्व-व्यापी दर्शन हो

• "मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए,
और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूंगा।" *(भजन संहिता 2:8)*

• "अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और
देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।" *(भजन संहिता 96:3)*

• "मैं तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार
पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।" *(यशायाह 49:6)*

परमेश्वर ने यीशु को सारे जगत का उद्धारकर्त्ता होने के लिये भेजा

• "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया
कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे
वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" *(यूहन्ना 3:16)*

• "स्वर्गदूत ने उनसे कहा, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं
जो सब लोगों के लिए होगा।" *(लूका 2:10)*

• "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है,
जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" *(तीतुस 2:11)*

• "कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति,
और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो।" *(लूका 2:32)*

यीशु ने हमें सारे जगत में सुसमाचार-प्रचार करने का आदेश दिया है

• "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।" *(मत्ती 28:19)*

• "तुम सारे जगत में जाकर
सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" *(मरकुस 16:15)*

• "सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार
उसी के नाम से किया जाएगा।" *(लूका 24:47)*

• "तुम . . . यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में,
और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" *(प्रेरितों के काम 1:8)*

• "और राज्य का यह सुसमाचार
सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब जातियों पर गवाही हो,
और तब अन्त आ जाएगा।" *(मत्ती 24:14)*

इसलिए, सोचिए:

- मैं परमेश्वर के विश्व-व्यापक दर्शन को किस प्रकार
  व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन के द्वारा पूरा कर रहा हूं?
- सारे जगत में सुसमाचार प्रचार करने के यीशु के महान आदेश का
  पालन करने के लिए मुझे व्यक्तिगत रीति से क्या करना चाहिए?

यह पुस्तिका आपको प्रभु के महान आदेश का पालन करने के लिए तैयार करेगी।।

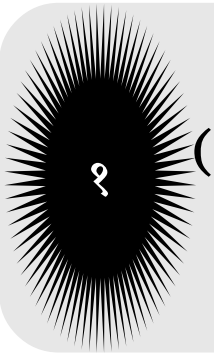

१ जीसी3
(ग्रेट कमिशन चैलेन्ज कैम्प्स्)
महान आदेश चुनौती शिविर

स्टीफन लिव्हरसेज़

"तो जबकि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं,
तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए?
और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और
उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए;
जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे,
और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे?" (2 पतरस 3:11, 12)

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जिसमें विलम्ब नहीं कर सकते। अनुमान लगाया जाता है कि प्रतिवर्ष 5 करोड़ 65 लाख लोग मरते हैं। इनमें से लगभग 10 प्रतिशत ही मसीह यीशु के अनुयायी होते हैं। इसका अर्थ यही हुआ कि प्रतिवर्ष लगभग 5 करोड़ आत्माएं मसीह-रहित अनंतकाल में जाती हैं। क्या हम इसके विषय में कुछ कर सकते हैं? मेरे विचार से इसका उत्तर "हां" है;
हमें सुसमाचार को पहले से और अधिक व्यापक स्तर पर तथा पहले से और अधिक गति से प्रचार करना चाहिए, क्योंकि मात्र मसीह यीशु में किया गया विश्वास ही लोगों को बचाता है।

हमें यह समझना अवश्य है कि पूर्णकालीन सुसमाचार-प्रचारकों तथा पास्टरों की वर्तमान संख्या के द्वारा इस काम को पूरा नहीं किया जा सकता। हमें फसल के लिए और अधिक मजदूरों की आवश्यकता है। 270 करोड़ लोग अब तक नहीं

जानते कि उन्हें पाप के बन्धन से छुटकारा देने के लिए मसीह यीशु ने अपने प्राण दिए। "भारत में, संसार के किसी भी भाग की तुलना में, ऐसे जन-समूहों की संख्या अधिक (और बड़ी) है जिनके मध्य मसीही विश्वासी, कलीसिया या कार्यकर्ता नहीं हैं। . . . संसार के किसी भी भाग में सुसमाचार-न-पाए-हुए लोगों का ऐसा केंद्रीकरण नहीं है।" (*ऑपरेशन मोबलाइजेशन,* पृष्ठ 312, 315)। इसका हल (समाधान) क्या है? प्रार्थना करें, प्रशिक्षित करें और भेजें; प्रार्थना करें, प्रशिक्षित करें और भेजें; प्रार्थना करें, प्रशिक्षित करें और भेजें। हमारा मानना है कि **जीसी**[3] कैम्प्स् स्वयंसेवकों को तैयार करने, प्रशिक्षित करने और उन्हें पवित्र आत्मा में भेजने के द्वारा इस काम को कर सकते हैं।

सन 1806 में अमेरीका एक नया देश था, उसे बने मात्र 30 वर्ष ही हुए थे। तब उत्तरपूर्वी प्रांत कनेटीकट के एक महाविद्यालय के अहाते में पांच युवक विलियम कैरी की पुस्तक पढ़ रहे थे जिसके शीर्षक का अर्थ
था: "गैर-मसीहियों के मन-परिवर्तन के साधनों को उपयोग में लाना मसीहियों के लिए अनिवार्य क्यों हैं इसकी एक जांच-पड़ताल।" अचानक बारिश-तूफान आया और उन्हें घास के ऊंचे ढेर के नीचे शरण लेनी पड़ी। वहां उन्होंने प्रार्थना में समय बिताया। जब वे बाहर आए, उन्होंने अपने सिर ऊपर उठाए और घोषणा की, "हम इसे कर सकते हैं, यदि हम करेंगे।" क्या करेंगे? इससे कम कुछ नहीं कि अपनी पीढ़ी में सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार कर देना। उस घास के ऊंचे ढेर के नीचे की गई प्रार्थना (*हेस्टैक रिवाइवल प्रेअर मीटिंग*) के परिणामस्वरूप अमेरिकी मिशनरी आन्दोलन आरंभ हुआ।

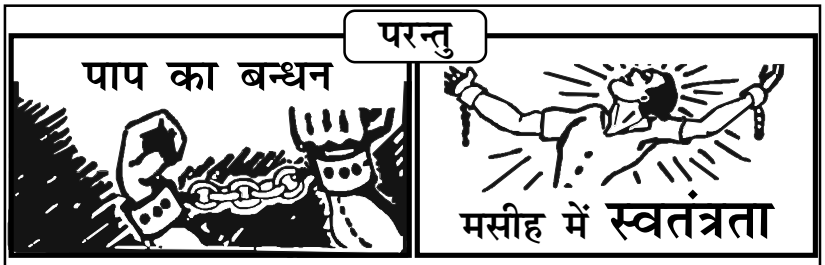

270 करोड़ लोग अब तक नहीं जानते कि उन्हें पाप के बन्धन से छुटकारा देने के लिए मसीह यीशु ने अपने प्राण दिए।

अस्सी वर्ष के बाद, इस समूह के वंशजों ने एक ऐसा बड़ा मिशनरी आन्दोलन आरंभ किया जैसा उस समय तक संसार में कभी नहीं हुआ था। वे, उनके ही समान जो इनसे पहले हुए थे, विश्वास करते थे कि सुसमाचार-प्रचार का काम उनके जीवनकाल में पूरा किया जा सकता था। अस्सी वर्षों के दौरान 22,000 से भी अधिक युवा स्वयंसेवक खेतों में गए और उन्होंने करोड़ों लोगों को मसीह यीशु में विश्वास करने की ओर लाया। जब उन में से एक अगुवे से पूछा गया कि उन्होंने इतने अधिक युवाओं को इस कार्य के लिये कैसे तैयार किया, उसका कहना था, "मैं तुम्हें इसे करने का उपाय बताता हूं, वह यह कि उनके सामने कुछ ऐसा काम रखो जो करने के लिए भयंकर कठिन हो।"

मेरा विश्वास है कि आनेवाले दस वर्षों में, सन 2020 तक, हम भारत, दक्षिण-पूर्व एशिया और अफ्रीका से इतने ही युवाओं को भेज सकते हैं। आपके जैसे इतने अधिक युवा मसीह यीशु की बुलाहट को प्रत्युत्तर दे रहे हैं जितने पहले कभी नहीं दिए थे। आपके सामने का काम भयंकर कठिन है, परन्तु वह अनंतकालिक पुरस्कार की प्रतिज्ञा करता है।

जीसी^{3} की योजना इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए ही की गई है। उन सब की जो इन कैम्प्स् में भाग लेंगे, महान आदेश को पूरा करने में कुछ भूमिका होगी। परमेश्वर ने आपको चुना है। इससे बढ़कर और कोई विशेषाधिकार नहीं है। जैसे पतरस ने अपनी पत्री में लिखा है, हमें मसीह यीशु के आगमन की आशा में भक्ति और पवित्र चालचलन का जीवन जीना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप मसीह के जल्द आने के लिए यत्न करेंगे। यह काम जिसे करने के लिये वह आपको बुला रहा है भयंकर कठिन तो है परन्तु एक ऐसा काम है जिसे पूरा करने में वही आपकी सहायता करेगा। सच्चाई तो यह है कि जब वह आपको सामर्थ्य देता है तब ही इस काम को पूरा किया जा सकता है। परमेश्वर हमारे साथ है, हम इस काम को कर सकते है, यदि हम इस काम को करेंगे। आइए हम इस काम को करें।

२ महान आदेश के लिए नवयुवक

स्टीफन लिक्हरसेज़

"तुम एक चुना हुआ वंश हो" 1 पतरस 2:9

परमेश्वर ने आपको जो जीवन दिया है उसके साथ आप सब से महत्त्वपूर्ण बात क्या कर सकते हैं? यह एक ऐसा प्रश्न है जो हम में से हर एक को अपने आप से करना अवश्य है। हमारे पास जीने के लिए केवल एक जीवन है और देने के लिए एक जीवन है। हम इसे किस लिए जीएंगे? हम इसे किस लिए देंगे? बहुत-सी भली और बुरी बातें चिल्ला चिल्लाकर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। एक मसीही के लिए बड़ी समस्या यह नहीं है कि अच्छे और बुरे के बीच में किसका चुनाव करे, परन्तु यह है कि अच्छे और सब से अच्छे के बीच में किसका चुनाव करे।

जब मसीह ने सत्तर मनुष्यों को दो-दो करके भेजा तब वे आनंद से लौटकर कहने लगे, "हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं" (लूका 10:17)। यीशु ने उनके आनंद में सहभागी होते हुए कहा, "मैंने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरता हुआ देखा।" परन्तु उसने यह भी कहा: ". . . इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं" (वचन 18-20)। उस सामर्थ्य के द्वारा, जो मसीह में हमारी है, अन्धकार के राज्य पर विजय पाना एक अच्छी बात है। फिर भी, यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात, आनंद का सही कारण, यह है कि मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के द्वारा परमेश्वर हमें जाने, हम उसकी संतान बनें, और स्वर्ग में हमारे लिए स्थान आरक्षित हो जाए। परमेश्वर हमें जाने, यह सब से महत्त्वपूर्ण बात है।

यीशु ने कहा, "उस दिन कई मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत आश्चर्यकर्म नहीं किए?' तब मैं उनसे खुलकर

कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ" (मत्ती 7:22-23)। क्षण भर के लिए सिर्फ कल्पना कीजिए कि *सर्वज्ञानी परमेश्वर* हमें न जाने या *सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता* की उपस्थिति से हम बाहर रहें इसका अर्थ क्या है। अनंतकाल तक इस दशा में रहने की तुलना में नरक की ज्वालाएं भी हलकी पड़ सकती हैं। कितना भयंकर अकेलापन! यह कल्पना मुझे दहला देती है।

परमेश्वर हमें जाने इसका सही-सही अर्थ क्या है? यीशु मत्ती के उसी अध्याय में समझाता है कि स्वर्ग के राज्य में मात्र वे ही प्रवेश करेंगे जो परमेश्वर पिता की इच्छा पर चलते हैं। "स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना" इसे दूसरे शब्दों में "परमेश्वर हमें जाने" कहते हैं और इसी का अर्थ हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जाना है। यदि आपने स्वयं को परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया है और अपना जीवन उसे दे दिया है तो आपने उस सब से महत्त्वपूर्ण बात को कर लिया है जो आप कर सकते हैं। अब क्या? अब दूसरी सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के बारे में औरों को बताएं - और महान आदेश यही सब-कुछ है।

यीशु ने अपने पुनरुत्थान की संध्या, कलीसिया के लिए अपनी इच्छा को प्रकट किया। उसने जो कहा वह सुसमाचारों में लिखा है। "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं" (यूहन्ना 20:21)। "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)। "सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा" (लूका 24:47)। यह परमेश्वर की आज्ञा है। परमेश्वर के सारे लोगों को तथा संसार में मसीह की देह का प्रतिनिधित्व करनेवाली सारी कलीसियाओं को बुलाया गया है कि सारी जातियों में अर्थात् सारे जातीय-समूहों में मसीह का सारा सुसमाचार लेकर पहुंचे। यीशु ने हमें बताया है कि, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब जातियों पर गवाही हो, और तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)।

2 पतरस 3:11-12 में प्रेरित पतरस अंत के समय के विषय में लिखता है, "जबकि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए? और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न

करना चाहिए?" ये वचन इस बात को साफ-साफ बताते हैं कि महान आदेश को पूर्ण करने की दिशा में काम करने के लिये हम में से हर एक को बुलाया गया है। हम इसे सुसमाचार का प्रचार करने तथा सुसमाचार को जीने के द्वारा करते हैं। इन दोनों को करने के द्वारा हम मसीह का शीघ्र वापस आना सुनिश्चित कर सकते हैं। पतरस ने यह भी बताया कि हम एक चुना हुआ वंश है। मेरा विश्वास है कि यह बात हर एक पीढ़ी के लिए सच है, परन्तु विशेषत: इस पीढ़ी के लिए, क्योंकि मुझे महसूस होता है कि महान आदेश को आप अपने जीवनकाल में पूर्ण होते देखोगे।

वह सब से महत्त्वपूर्ण बात क्या है जो आप कर सकते हैं? वह चाहे जो भी हो, मैं जानता हूं कि उसका कुछ-न-कुछ संबंध मसीह के महान आदेश से होगा। मैं आपसे याचना करता हूं कि जो कुछ मसीह आपसे करने कहता है, उसे कीजिए। उसे खोए हुओं के लिए कीजिए, उसे जो मसीह को नहीं जानते उनके लिए कीजिए, उसे अपने आनंद के लिए कीजिए, और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए कीजिए!

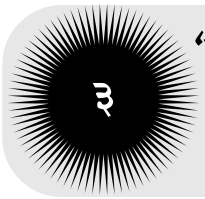

३ 'टेन्टमेकर्स मैन्युअल' को उपयोग में लाने के लिये मार्गदर्शन

रोलैंड बॉमेन

'टेन्टमेकर्स मैन्युअल' का उपयोग, मसीह यीशु के साथ चलने और उसकी सेवा करने में, हमारी सहायता करता है।

1. हमें मसीह यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता ग्रहण करना अवश्य है। एक टेन्ट-मेकर (स्वावलंबी मिशनरी) के रूप में सेवा करने के लिए अवश्य है कि पहले हम अपने स्वयं के उद्धार के विषय में सुनिश्चत हो जाएं।

देखिए: पृष्ठ 15-18 "मिशनरी की तैयारी"

उद्धार बुनियाद (नींव) है:

देखिए: पृष्ठ 27 "संशोधित एन्गल् स्केल्" इस पृष्ठ के सब से निचले पट्टे का अध्ययन कीजिए और उसे लागू कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 51-67 "आत्मा बचाने के सात कदम" इस सम्पूर्ण भाग को पढ़िए और प्रत्येक कदम का अभ्यास कीजिए।

2. अवश्य है कि हम पवित्र आत्मा की परिपूर्णता में मसीह के लिए जीए और उसके साथ चलते रहें।

देखिए: पृष्ठ 15-18 "आदर्श मिशनरी" के विशेष गुणों को पढ़िए और उनको अपने जीवन में अपनाइए।
नियमित वृद्धि की खोज में रहिए (इस भाग के 2 से 5 बिन्दु)।

देखिए: पृष्ठ 29-31 "मसीह में" इस पाठ को समझिए कि अपने जीवन में उसके अनुसार चलें।

देखिए: पृष्ठ 16-17 - 6. आत्मिक अनुशासन का पालन कीजिए।

- 7. प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा परमेश्वर के वचन में बिताइए।
- 8. अपनी गवाही देने में और दूसरों से उनकी गवाही पुछने में हिचकिचाहट महसूस न कीजिए। (देखिए: पृष्ठ 54)
- 9. पवित्र आत्मा पर निर्भर रहिए।
- 10. "एक दूसरे से" का पालन कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 27-28 "संशोधित एन्गल् स्केल्"- मसीह के समान बनने के लिए शिष्य बनने के सारे पहलुओं में बढ़ते जाइए।

देखिए: पृष्ठ 25-26 किसी को अपना सलाहकार बनाइए। अपनी अविश्वासी और विश्वासी की सूची तैयार कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 47-48 अपनी बुलाहट के प्रति सुनिश्चित हो जाइए और अपनी कार्य-योजना को तैयार कीजिए।

3. अब हम अपने आस-पास के लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने का काम करते रह सकते है।

देखिए: पृष्ठ 19-20 तैयारी की समय-रेखा का अनुकरण कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 32-44 अपने आस-पास के धार्मिक वातावरण का अध्ययन कीजिए। इन चार धर्म के अलावा और भी अन्य धर्म हो तो उसकी भी ऐसी ही रूपरेखा तैयार कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 15-18 आदर्श मिशनरी के गुणों को अपनी जीवन-शैली का हिस्सा बनाइए।

- वित्तप्रबन्ध और पत्र-व्यवहार एवं संपर्क के लिए सहायक समूह और तकनीकी कार्यदल का चुनाव कीजिए या संघटन कीजिए।

देखिए: पृष्ठ 21-22 व्यक्तिगत स्तर पर आत्मा जीतने के लिए

देखिए: पृष्ठ 23-24 "सुसमाचार-प्रचार"
"ई. आर. की कार्य योजना"

- अपने विश्वास को, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से औरों के साथ बांटिए/औरों को बताइए। जब भी किसी से बात समाप्त करें तो इस प्रकार करें कि वह व्यक्ति और जानने की इच्छा रखे; द्वार कभी बन्द न कीजिए।

- जैसे-जैसे लोग मसीह के पास आते हैं, उनका नाम अविश्वासियों की सूची से हटाकर विश्वासियों की सूची में दर्ज कीजिए और उन्हें प्रार्थना-समूह में सम्मिलित कीजिए।

- प्रार्थना-समूह को ऐसे बनाइए कि हर एक के पास कोई-न-कोई काम हो:

अगुवा	सहायक अगुवा
शिक्षक	सहायक शिक्षक
गायन अगुवा	सहायक गायन अगुवा
सचिव	सहायक सचिव
कोषाध्यक्ष (ख़ज़ांची)	सहायक कोषाध्यक्ष
प्रबन्धक	सहायक प्रबन्धक
स्वच्छता-अगुवा	सहायक स्वच्छता-अगुवा

- जब आपके समूह में 15-20 व्यक्ति हो जाते हैं तो 6-12 महीनों में उसे विभाजित कीजिए और नये सहायक नियुक्त कीजिए। कार्यकर्ताओं को कुछ इस प्रकार विभाजित करें:

अगुवा	सहायक अगुवा
सहायक शिक्षक	शिक्षक
गायन अगुवा	सहायक गायन अगुवा
सहायक सचिव	सचिव

और इसी प्रकार अन्य .....

- इस प्रकार दोनों समूह में आरंभ से ही सारे कार्यकर्ता होंगे।

- ऐसे 3 या 4 विभाजनों के बाद हम कलीसिया आरंभ करने की योजना बना सकते हैं।

- मातृ-समूह को चाहिए कि कलीसिया स्थापन करने के लिए एक-दो वर्ष तक देखभाल करने में सहायता करें और तब तक उनके पास मिलने का स्थान तथा एक पास्टर हो जाना चाहिए और वे इस चक्र को पुन: आरंभ करने के कार्य में लगाए जाएं।

4. कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त

- जितना संभव हो सके, पहले प्रार्थना-समूह परिवार होने चाहिए।

- खोजिओं के समूह में उन्हें पुराने मसीहियों के साथ न मिलाइए। उन्हें अध्ययन करने दीजिए और यूहन्ना-रचित सुसमाचार के द्वारा अपना स्थान खोजने दीजिए (देखिए: पृष्ठ 23 - "लोगों को लाना" का बिन्दु 2 और 3)।

- अधिक परिपक्व समूहों में किसी को तब तक शिक्षक नियुक्त न कीजिए जब तक कक्षा आरंभ नहीं हो जाती। तब किसी को अगुवाई करने के लिए नियुक्त कीजिए। इस प्रकार हर एक जन तैयार होगा और यह भी दिखाई देगा कि किस में सिखाने का वरदान हैं।

- परिवारों से मजबूत कलीसिया का ढांचा बनता है। एक समूह जिसमें सारे वृद्ध लोग हों या सारी महिलाएं हों, या सारे युवा हों, या सारे छोटे बच्चे हों, एक स्वस्थ कलीसिया में विकसित नहीं हो सकता।

- **टेन्ट-मेकर (स्वावलंबी मिशनरी) के साप्ताहिक समय के विभाजन के लिए एक सुझाव:** 30 मिनट सलाहकार के साथ, 1 घंटा संगति में, 1 घंटा अविश्वासियों के साथ या नये विश्वासियों के साथ, 1 घंटा सामाजिक सेवकाई में - मछुवे की सेवकाई अर्थात् अविश्वासियों के मध्य मनुष्यों को खोजना (लूका 5:1-11), 1 घंटा नये शिष्यों के साथ, प्रतिदिन कम-से-कम 30 मिनट अपने परिवार के साथ। यह सब और आपका अपनी जीविका के लिए किया जानेवाला काम आपको व्यस्त रखेगा। यदि आपके पास खाली समय अधिक है तो उपरोक्त कामों में दिया जानेवाला समय उसी अनुपात में बढ़ाइए।

- अपनी मंडली (संगति) से बाहर के मसीहियों और बाइबल-संबंधी समूहों के साथ एक खुला एवं काम आनेवाला संबन्ध बनाए रखिए (देखिए: पृष्ठ 47 - 1 स्तर, ङ)।

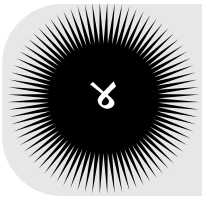

४ मिशनरी का चरित्र

आदर्श मिशनरी के विशेष गुण निम्नलिखित होंगे:

- बुलाया गया (यशायाह 6:3-9)
- पूर्णत: पवित्र किया गया (1 कुरिन्थियों 1:1-8)
- प्रार्थना तथा वचन में डूबा हुआ
  (इफिसियों 6:18; भजन संहिता 119:11)
- विश्वासयोग्य (इब्रानियों 10:22-24)
- अ-सांसारिक (फिलिप्पियों 3:7-11)
- प्रशंसा या निन्दा से अप्रभावित (भजन संहिता 148)
- स्वार्थी इच्छाओं से मुक्त (फिलिप्पियों 3:14)
- खान-पान तथा वस्त्र के चुनाव में सीधा-सादा (फिलिप्पियों 4:11-13)
- आत्माओं के लिए प्रेम से भरा (लूका 19:9-10)
- अपने शरीर पर नियंत्रण रखनेवाला (इब्रानियों 12:1)

मिशनरी की तैयारी (चरित्र):

1. **उद्धार की प्राप्ति** (प्रकाशितवाक्य 3:20):
   - क) पाप से दूर होना तथा पाप-क्षमा (इब्रानियों 12:1-2)
   - ख) बलिदानात्मक जीवन-शैली (रोमियों 12:1)
   - ग) आत्मा की परिपूर्णता का बाइबल-आधारित जीवन-शैली द्वारा प्रदर्शन (इफिसियों 5:18)
   - घ) मिशन के लिए बाइबल-आधारित समझ
     (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:46-49; यूहन्ना 20:20-23; प्रेरितों के काम 1:8)
   - ङ) नम्र, सेवा करने का तथा सीखनेवाला मन (मत्ती 11:29)

2. बुद्धि में वृद्धि (लूका 2:52):

क) पढ़ने तथा लिखने की योग्यता (प्राथमिकता)

ख) सिखाने के योग्य (2 तीमुथियुस 2:2)

3. डील-डौल में वृद्धि (लूका 2:52):

क) अच्छी सेहत तथा देखभाल

ख) प्रतिदिन की समय-सूची में अनुशासन

ग) खाने, सोने तथा व्यायाम करने की अच्छी आदतें (1 तीमुथियुस 4:7-8)

4. परमेश्वर का अनुग्रह (लूका 2:52):

क) उसके समान बनने का लक्ष्य (फिलिप्पियों 3:10)

ख) आत्मा के फलों को धारण करना (गलातियों 5:22)

ग) मसीह के साथ की अपनी चाल में बढ़ना (1 यूहन्ना 2:5, 6)

5. मनुष्यों का अनुग्रह (लूका 2:52):

क) सब मनुष्यों से अनुग्रह पाना (प्रेरितों के काम 2:47)

ख) परमेश्वर ने यूसुफ पर मनुष्यों का अनुग्रह होने दिया (उत्पत्ति 39:21)

6. आत्मिक अनुशासन का पालन:

क) प्रार्थना (लूका 11:1)

ख) उपवास (मत्ती 6:16-18)

ग) आराधना (भजन संहिता 33:1-5)

घ) सेवा (इफिसियों 4:12; यहोशू 24:14-25; मत्ती 25:34-40)

ङ) दशमांश देना (मलाकी 3:8-12)

च) प्रतिदिन की पारिवारिक प्रार्थना (व्यवस्था. 6:1-3; 7-9; 11:19-20; 2 तीमुथियुस 1:5)

1) पत्नी के साथ

2) सारे परिवार के साथ (व्यवस्था. 4:9-10)

3) प्रार्थना-समूह बनाने के लिये पड़ोसियों को आमंत्रित करना परन्तु अपने निकटतम् परिवार के साथ प्रार्थना नहीं छोड़ते हैं।

ज) पाप मान लेना (याकूब 4:16)

झ) सताव सहना (मत्ती 5:11,12; इब्रा 11:25-26, 32-40)। देखिए: पाठ 13

7. परमेश्वर का वचनः

क) पठन करना - मनन का जीवन
(कुलुस्सियों 4:16; व्यवस्थाविवरण 31:11)

ख) अध्ययन करना - सन्दर्भागत, व्याकरणात्मक, अनुमानात्मक
(प्रेरितों 6:2; 2 तीमुथियुस 2:15)

ग) कंठस्थ करना
(भजन संहिता 119:11; 1 कुरिन्थियों 15:2-3)

घ) पालन करना - वचन पर आधारित व्यावहारिक जीवन-शैली
(1 शमूएल 15:22; प्रेरितों 5:29)

ङ) सिखाना - औपचारिक तथा अनौपचारिक ढंग से वचन सिखाना
(प्रेरितों 5:42; लैव्यव्यवस्था 10:11)

8. स्वयं की गवाही सुनाने की क्षमता (प्रेरितो 1:8)

9. आत्मा में सेवकाई
(रोमियों 12:6-8; 1 कुरिन्थि12:1-11; इफिस्सियों 4:11-13)

10. नया नियम में दिए गए "एक दूसरे से" का पालन करना

- नया नियम में दिए गए कुछ "एक दूसरे से" -

"एक दूसरे से" प्रेम करो

1) यूहन्ना 15:12 - एक दूसरे से प्रेम रखो
2) 1 यूहन्ना 4:7 - हम आपस में प्रेम रखें
3) 1 पतरस 4:8 - एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो
4) 1 पतरस 1:22 - तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो
5) इफि. 4:32 - एक दूसरे पर कृपाल, करुणामय हो
6) रोमियों 12:10 - एक दूसरे पर मया रखो
7) गलातियों 5:13 - प्रेम से एक दूसरे के दास बनो

"एक दूसरे" का आदर करो

8) यूहन्ना 13:14 - तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए
9) 1 पतरस 5:5 - एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बान्धे रहो
10) फिलि. 2:3 - एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो
11) इफि. 4:2 - प्रेम से एक दूसरे की सह लो
12) रोमियों 15:7 - एक दूसरे को ग्रहण करो
13) रोमियों 12:10 - आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो
14) इफि. 5:21 - एक दूसरे के आधीन रहो

"एक दूसरे" को क्षमा करो

15) रोमियों 14:13 - एक दूसरे पर दोष न लगाएं
16) इफि. 4:32 - एक दूसरे के अपराध क्षमा करो
17) कुलु. 3:13 - एक दूसरे के अपराध क्षमा करो
18) याकूब 5:16 - आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो

"एक दूसरे" की उन्नति करो

19) 1 थिस्स. 5:11 - एक दूसरे को शान्ति दो
20) 1 थिस्स. 5:11 - एक दूसर की उन्नति के कारण बनो
21) रोमियों 14:19 - उन बातों का प्रयत्न करें जिससे ... एक दूसरे का सुधार हो
22) गला. 6:2 - एक दूसरे के भार उठाओ
23) कुलु. 3:16 - एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ
24) इब्रा. 10:24 - भले कामों में उसकाने के लिये एक दूसरे की चिन्ता करें
25) 1 पतरस 4:10 - जो वरदान मिला है ... उसे ... एक दूसरे की सेवा में लगाए
26) इब्रा. 3:13 - एक दूसरे को समझाते रहो

"एक दूसरे" के साथ न कीजिए:

27) याकूब 4:11 - एक दूसरे की बदनामी न करो
28) गलाति. 5:15 - एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो
29) गलाति. 5:26 - न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें
30) याकूब 5:9 - एक दूसरे पर दोष न लगाओ
31) कुलु. 3:9 - एक दूसरे से झूठ मत बोलो
32) रोमियों 14:13 - अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखें

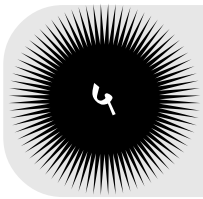

पहले, दौरान तथा बाद में

मिशनरी सेवकाई के लिए तैयारी (जाने के पहले):

- बहुसांस्कृतिक तथा भाषा का अनुभव - वह जो मैं जानता हूं या नयी भाषा
- जिस देश में जाना है वहां के धर्म/धर्मों का अध्ययन
- लोगों को मसीह के पास लाने तथा उन्हें शिष्यत्व में बढ़ाने योग्य जीवन-शैली
- कलीसियाई सेवकाई का एक वर्ष
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल तथा स्कूल ऑफ इव्हेन्जेलिज्म से प्रशिक्षण
- पत्नी के लिए सेवकाई का तथा बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध

यात्रा:

- स्वस्थ जीवन-शैली तथा बीमारी से बचने के लिए सारे टीके
- वैध पासपोर्ट तथा यात्रा के काग़ज़ात
- अपने देश में तथा जहां जा रहे हैं उस देश में संपर्क स्थापन
- मेरी नागरिकता के संबंध में स्थानीय सोच क्या है इसकी समझ
- प्रार्थना तथा आर्थिक दल
- उपयुक्त कपड़े, संप्रेषण/पत्र-व्यवहार, परिवहन, संगति की आवश्यकता

आगमन:

- स्वास्थ्यपूर्ण भोजन की व्यवस्था तथा रहने के लिए स्थान सुरक्षित कीजिए
- स्थानीय चिकित्सा सुविधाओं से संपर्क बनाइए
- कानूनी काग़जात का प्रबन्ध कीजिए
- सरकारी नेता तथा पड़ोसियों से मुलाकात कीजिए, वहां का इतिहास जानिए
- उस क्षेत्र तथा लोगों की, उनके रिवाजों और शिक्षा की अच्छी जानकारी

प्राप्त कीजिए

- स्थानीय वेतन-मान तथा काम पर रखने या निकालने के नियमों का पालन कीजिए
- कलीसिया के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए: नाप, आत्मिक जीवन, वृद्धि

मध्यावधि:

- वहां के रिवाज तथा भाषा को सीखिए - क्या करना और क्या नहीं करना
- मित्र बनाइए तथा उनके परिवारों के बारे में जानिए
- समय के स्थानीय उपयोग की आदत डालिए
- लोगों के जीवन में आत्मिक यात्रा आरंभ कीजिए, उन्हें संशोधित एन्गल् स्केल से परिचित कराइए। (देखिए: पाठ 9 - संशोधित एन्गल् स्केल)
- फिल्म, कथा-कथन, साहित्य, मित्रता, व्यवसाय का उपयोग कीजिए

दीर्घकालीन:

- लोगों को यीशु की ओर चलाते (बढ़ाते) रहिए
- लोगों को कामों के द्वारा - तत्पश्चात शब्दों के द्वारा - आशीषित कीजिए
- मसीह में विश्वास करने की ओर लोगों की अगुवाई कीजिए
- उन्हें मसीह के साथ चलना सिखाइए
- उन्हें मसीह की गवाही देने के लिए प्रशिक्षित कीजिए
- उन्हें एक विश्व-दर्शन तथा कार्य-योजना दीजिए (देखिए: पाठ 16 - कार्य-योजना)
- उन्हें प्रार्थना-समूह में आमंत्रित कीजिए तथा शिष्य बनाइए
- प्रार्थना-समूहों को कलीसिया से जोड़िए तथा अगुवों को तैयार कीजिए
- सेवकपन सिखाते हुए इस चक्र को बार-बार दोहराइए

६ सामान्य तौर पर लोगों तक पहुंचना

कीजिएः

- संपर्क करने के पहले प्रार्थना कीजिए – प्रार्थना सैर पर जाइए
- कलीसिया–रोपण के लिए स्थान (अपनी सेवकाई का फल रखने के लिए स्थान) का चुनाव कीजिए
- स्वयं को/अपने दल को सुसमाचार अपने जीवन में उतारने के लिए तैयार कीजिए
- उस जन–समूह का अध्ययन कीजिए
- मूल्यांकन के लिए एन्गल् स्केल् का उपयोग कीजिए
- मित्र बनाइए
- अपनी कहानी सुनाइए (परमेश्वर के वचन, टेप, वीडियो, साहित्य, कला तथा उदाहरण के द्वारा)
- उद्धार की योजना बताइए
- निर्णय तथा प्रार्थना के लिये पूछिए
- फॉलो–अप का प्रबन्ध कीजिए

लोगों को सुसमाचार बताने की पद्धतियांः

- थेल्मा ब्राउन द्वारा लिखी गई **"सेमिनारः आत्मा बचाने के सात कदम"** पुस्तिका देखिए। **(इस पुस्तिका में पृष्ठ 51 से आगे)**

न कीजिए:

- लोगों की अगुवाई उनके ज्ञान से परे करने का प्रयास न कीजिए
- किसी भी व्यक्ति, संस्कृति या किसी भी बात का अनादर न कीजिए
- निर्णय लेने के लिए जबरदस्ती न कीजिए
- अपनी संस्कृति का उपयोग न कीजिए – उनकी संस्कृति का कीजिए

मिशन कार्य के अव्यावसायिक रास्ते
(लुज़ान वर्ल्ड मिशन्स् कौन्फ्रेरेन्स में सुझाए गए)

- शरणार्थी
- कारोबारी लोग (टेन्ट-मेकर्स)
- मठ या आश्रम के समुदाय
- साम्राजिक (प्रभावशाली) मानवसेवा
  (लोकोपकारी सेवाएं), (पाठशालाएं तथा अस्पताल)
- व्यावसायिक लोग
- पर्यटक
- विद्यार्थी

७ सुसमाचार-प्रचार ई. आर. की कार्य-योजना

लोगों को लाना:

- निमंत्रण बुद्धिमानी के साथ दीजिए। रिश्तें अत्यंत महत्त्व के होते हैं।
- यूहन्ना रचित सुसमाचार का वितरण कीजिए - "विश्वास करो" को नीले रंग से रेखांकित कीजिए और "जीवन" के चारों ओर लाल रंग से गोला बनाइए। इन दो शब्दों के बीच के संबंध का अध्ययन कीजिए।
- छोटे समूह बनाइए।
- सभा के लिए स्थान का प्रबंध कीजिए।
- आकर्षण पैदा कीजिए (जैसे कि: खेल, साथ-साथ समय बिताना, स्वास्थ, अंग्रेजी सीखना, व्यावयायिक प्रशिक्षण तथा संगीत समूह)।

- यदि आप स्वावलंबी मिशनरी है तो अपना कारोबार आरंभ कीजिए।

यदि लोग सुसमाचार का स्वागत करने का मन रखते हैं:

- सभी तथा किसी भी प्रश्न का उत्तर देने तैयार रहिए।
- आशीष दीजिए तथा सेवा कीजिए।
- यीशु के पास आने का निमंत्रण दीजिए।
- प्रार्थना का समय तथा बाइबल अध्ययन आरंभ कीजिए
- विश्वासियों की संगति का गठन कीजिए।
- विश्वासियों को अपने विश्वास की गवाही देना सिखाइए।

ई. आर. की कार्य-योजना

पूछताछ कीजिए – सुसंगत आँकड़ों को एकत्रित करते हुए लोगों की आत्मिक दशा का सर्वेक्षण तथा छानबीन कीजिए। (देखिए: पाठ 9 – संशोधित एन्गल् स्केल् – पृष्ठ 28)

प्रचार कीजिए – सुसमाचार-प्रचारकों के स्थानीय दलों को लक्ष्य किए गए स्थानों में सभाएं करने या/और उचित प्रचार करने के लिए भेजा जाता है। "सेमिनार: आत्मा बचाने के सात कदम" पुस्तिका का अध्ययन। उसके बाद "चरवाही करने के लिए बुलाए गए परमेश्वर के लोग" इस पुस्तक की सहायता से पोर्टेबल बाइबल स्कूल का आयोजन किया जाना चाहिए।

स्थापित कीजिए – नये विश्वासियों का प्रार्थना समूह बनाइए तथा उन्हें शिष्यों के रूप में स्थापित कीजिए। (देखिए: पाठ 10 – मसीह में; पाठ 8 – शिष्य बनाओ; पाठ 9 – संशोधित एन्गल् स्केल् – पृष्ठ 27)

सुसज्जित कीजिए – पोर्टेबल बाइबल स्कूल, अनुमानात्मक बाइबल अध्ययन (आइ.बी.एस.), प्रार्थना सेवकाइयां, डिकेड ऑफ अॅडवान्स के प्रस्ताव तथा महिला सभाओं के द्वारा उनका आत्मिक पोषण आरंभ कीजिए।

प्रसार (विस्तार) कीजिए– नया विश्वासी (देखिए: पाठ 8 – शिष्य बनाओ) एक अयाजकीय पासबान (ले-पास्टर) का काम आरंभ करता है। वह एक विश्व कार्य-योजना विकसित करता है (देखिए: पाठ 16 – कार्य-योजना) और 'अविश्वासी और नये विश्वासी' की सेवकाई आरंभ करता है। संभव होने पर तथा आवश्यकता होने पर वह स्कूल ऑफ इवेन्जेलिजम् में प्रशिक्षण लेता है। (देखिए: पाठ 10 – मसीह में)

मूल्यांकन कीजिए – अपने परामर्श-दाता, अपने आत्मिक जीवन, सेवकाई-समूहों, तथा अपने पासबान के द्वारा वह वार्षिक स्तर पर स्वयं का पुन: परीक्षण करता है और अपनी सेवकाई को व्यवस्थित करता है।

प्रोत्साहित कीजिए – निरंतर की वृद्धि को प्रोत्साहन देने एवं निरीक्षण करने के लिए फॉलो-अप साहित्य का उपयोग कीजिए।

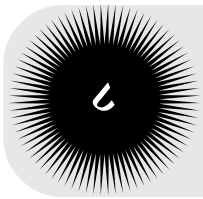

शिष्य बनाओ

2 तीमुथियुस 2:2

महान आज्ञा के पदः मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 10:25-28; व्यवस्थाविवरण 6:5-6

महान आदेश के पदः मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:46-49; यूहन्ना 20:20-23; प्रेरितों के काम 1:8; उत्पत्ति 12:1-3; भजन संहिता 2:8; यशायाह 6:8; मत्ती 24:14

स्तर क - सलाहकार (प्रेरितों 9:26-28)

.....

(सलाहकार का नाम)

सिखाने	⬇	⬆	सीखने
अगुवाई करने	⬇	⬆	जबाबदेही होने
उत्तर देने	⬇	⬆	प्रश्न पूछने
आदर्श प्रस्तुत करने	⬇	⬆	अनुकरण करने

स्तर ख - ..... **- संगति**

(आपका नाम) (प्रेरितों 2:42-47)

.....

(संगति-समूह का नाम)

स्तर ग – अन्य लूका 8:4-15

उद्धार		आश्वासन, स्वतंत्रता, पारिवारिक जीवन
प्रेम दिखाओ	↓	वचन – पढ़ना, अध्ययन करना, कंठस्थ करना, पालन करना, सिखाना
विश्वास की गवाही दो	↓	प्रार्थना – स्तुति, आराधना, धन्यवाद, निवेदन
आशा दो	↓	पवित्र आत्मा –फल लाना, वरदानों का उपयोग आत्माओं की फसल
आओ और देखो	↓	सेवा – प्रेम, आज्ञा-पालन, जाना, “एक दूसरे से” को लागू करना

अविश्वासी

1. ____________________
2. ____________________
3. ____________________
4. ____________________
5. ____________________

विश्वासी

1. ____________________
2. ____________________
3. ____________________
4. ____________________
5. ____________________

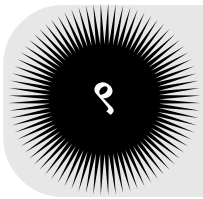

९

संशोधित एन्गल् स्केल्

मसीह के समान बनना

(फिलिप्पियों 3:7-11)

(शिष्य बनना)

10. प्रेम - सुसमाचार का प्रदर्शन (1 यूहन्ना 3:18)

सेवकत्व

9. क्रूसित - मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया (गलातियों 2:20)

8. सेवा - सुसमाचार को फैलाना (मत्ती 9:37)

7. वरदान - आत्मा के, उन्नति और सेवा के कामों के लिए (1 कुरिन्थियों 14:12)

नेतृत्व

6. फल - आत्मा के (गलातियों 5:22),
- भले कामों के (प्रेरितों 9:36),
- लोगों को मसीह के पास लाने के (लूका 5:1-11)

5. परिपूर्णता - मसीह में (इफिसियों 5:8)

4. समर्पण - दु:ख उठाना (प्रेरितों के काम 9:16),
- बलिदान (रोमियों 12:1)

3. आज्ञापालन - आचरण-नियमों में वृद्धि (मत्ती 28:18-20)

शिष्यत्व

2. बपतिस्मा - मसीह की देह में सम्मिलित कर लेना,
- परिवार की स्थापना (रोमियों 6:1-6)

1. आश्वासन - बन्धन का नाश (प्रेरितों के काम 19:17-19)

पाप मान लेना	**निमंत्रण**	**नया जन्म**	**ग्रहण करना**	**हृदय में वास**
1 यूहन्ना 1:9	प्रका. 3:20	यूहन्ना 3:3-8	1 यूहन्ना 5:1-12	इफि. 1:1-14

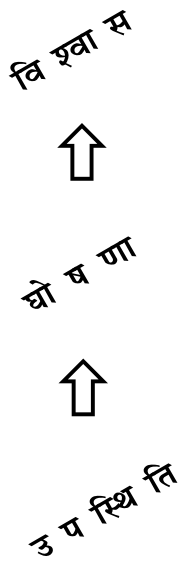

विश्वास

⇧

घोषणा

⇧

उपस्थिति

10. निर्णय (यूहन्ना 4:39-42)

9. स्वीकार करने के लिए चुनौती (यूहन्ना 14:1-14)

8. परिवर्तन तथा कीमत का मूल्यांकन (फिलिप्पियों 3:7-11)

7. व्यक्तिगत आवश्यकताओं का मूल्यांकन (रोमियों 12:2)

6. भविष्य में पड़नेवाले व्यक्तिगत प्रभाव की चुनौती (लूका 18:18)

5. समझना (मत्ती 13:23)

4. सुसमाचार का ज्ञान (रोमियो 1:20)

3. सुनना आरंभ - सुसमाचार की पहचान (मत्ती 24:14)

2. कुछ न समझना ((रोमियों 1:21-25)

1. कभी नहीं सुना (रोमियों 10:14)

विरोधी	**बन्द**	**उदासीन**	**अनुकूल**	**खुले, खोजी**

सॉडगार्ड् रेखा

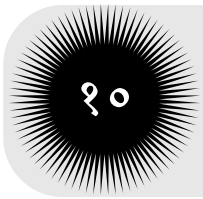

मसीह में

रोलैंड बॉमेन द्वारा तैयार किया गया वस्तुपाठ

आवश्यक सामग्री: 1 काँच का बड़ा बरतन, 1 छोटा ग्लास, कुछ पत्थर (छोटे और बड़े जो ग्लास में जा सकेंगे), चुटकी भर बालू और धूल

तैयारी: बड़े बरतन को पर्याप्त पानी से भर दीजिए

भरे जाने की आवश्यकता, मसीह से बाहर व्यर्थता (इफिसियों 5:18)

1. मैंने पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूर्ण होने के विषय में सुना और पढ़ा था और उसकी लालसा की थी। मैं अपना प्रात:कालीन मनन करता (ग्लास को पानी में डुबाइए कि पूरा भर जाए), परन्तु दोपहर होते-होते मैं आधा ही रह जाता (ग्लास को हिलाइए ताकि पानी बाहर गिरे), जैसे-जैसे परेशानियां या परीक्षाएं आतीं, मैं और, फिर और खाली होता जाता (पानी ग्लास से बाहर छलकाते रहिए)।

मसीह में, परिपूर्णता, सुरक्षा, मसीह के जीवन का चरित्र (गलातियों 2:20)

2. मैं ने इफिसियों 1 में पढ़ा जहां *मसीह में* होने के विषय में लिखा है। (ग्लास को बड़े बरतन के अंदर, पानी में रखिए।) अब पानी ग्लास को भर देता है और ग्लास पानी के अंदर है। (किसी से कहिए कि आकर पानी को स्पर्श किए बिना ग्लास को स्पर्श करे।) जब हम मसीह में हैं, तब शैतान हम तक नहीं पहुंच सकता। (उस व्यक्ति से कहिए कि ग्लास को पानी में अंदर रखते हुए ही उठाकर उल्टा करे।) क्या वह खाली हो जाता है? (उससे कहिए कि ग्लास को हिलाए।) पहले जब ग्लास पानी के बाहर था और हम ने उसे हिलाया था, वह खाली हो गया था, परन्तु अब वह पूरा भरा ही रहता है।

पाप पवित्र आत्मा को उसके उपयुक्त स्थान से हटाता है। छलकता तो है परन्तु पूरा नहीं है। (इब्रानियों 12:1)

3. (ग्लास में पत्थर डालिए। ग्लास को पानी से बाहर उठाइए।) पूछिए: क्या ग्लास पूरा भरा है? हां, क्योंकि पानी मुंह तक है, या फिर नहीं क्योंकि पत्थरों ने पानी की जगह ली है? कुछ लोग ऐसा जीवन जीते हैं जहां पाप (पत्थर) उन्हें आत्मा से परिपूर्ण होने से रोकता है। आप के हृदय में वह कौन-सी बात है जो पवित्र आत्मा का स्थान लेती है? आप किस से भरे हुए हैं, पाप (पत्थर) से या मसीह से? पानी मुंह तक हो सकता है, परन्तु संभावना है कि ग्लास पत्थरों के कारण आधा ही भरा हो।

याकूब 2:10
1 यूहन्ना 1:9
इब्रा. 12:1

4. (पत्थरों को निकालिए और ग्लास को पुन: पानी से भरिए। पानी में चुटकी भर धूल डालिए। किसी से उसे पीने कहिए।) धूल या पाप थोड़ा-सा होने पर भी पूरे को गंदा कर देता है।

जो अंदर है वही बाहर आता है (याकूब 3:9-12)

5. (ग्लास को पानी में रखिए और कुछ पानी को उससे बाहर गिराने का प्रयास कीजिए।) जब मैं ग्लास को पानी में रखता हूं और कुछ उंडेलता हूं, बाहर क्या निकलता है? निश्चय ही पानी। जब कोई आपको क्रोध दिलाता है, आपके मुख से क्या निकलता है, शाप या आशीषें? मसीह से आशीष ही निकलती है। "पिता उन्हें क्षमा कर।" क्या मेरी नाराज पत्नी, मांग करनेवाले बच्चे, लड़ाकू दुकानदार, लापरवाह ड्राइवर के प्रति मेरा हमेशा यही प्रत्युत्तर होता है? यदि बाहर कड़वाहट निकलती है तो मेरे भीतर सिरका है, शहद नहीं। यदि मैं मसीह से भरा हुआ हूं तो मात्र मसीह ही बाहर आएगा!!!

जब हमें धक्का दिया जाता है, औरों को आशीष मिलती है (उत्पत्ति 12:1-3 कुलु. 1:27 रोमियों 12:1-2)

6. (पानी से भरे ग्लास को किसी के निकट ले जाइए और उसे ग्लास पर हलके से मारने कहिए। ध्यान दीजिए कि कुछ पानी उस व्यक्ति पर भी छलक जाए।) रिश्तों के संपर्क की सभी दशाओं में, आप जिसके संपर्क में आते हैं वह आपके जीवन में उपस्थित पवित्र आत्मा द्वारा प्रभावित होना चाहिए। उन्हें महसूस होना चाहिए कि वे आशीषित हुए हैं क्योंकि वे आपके निकट रहे हैं।

बोतल को समुद्र में फेंक दीजिए और होने दीजिए कि समुद्र उसे गले लगाए और भर दे। अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दीजिए। होने दीजिए कि वह आपको भर दे, आपको चारों ओर से घेर दे, आपको गले लगाए और आप में निवास करे।

लोगों को अनुरोध कीजिए कि वे अपने पापों को स्वीकार करें, मसीह से प्रार्थना करें कि वह उनके जीवन में से पत्थर तथा गंदगी के कणों को बाहर निकाले, और वे उसकी परिपूर्णता के प्रति समर्पित हो जाएं। "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" (कुलुस्सियों 1:27)।

प्रार्थना के साथ समाप्त कीजिए।

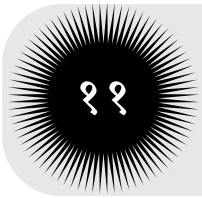

११

जीववादः एक परिचय

<u>जीववाद का सारांश</u>

क. परिभाषा – जीववाद वह विश्वास है जिसके अनुसार प्रकृति में अंधकार की आत्मिक ताकतों का निवास है और उन्हें निरंतर संतुष्ट करते रहना अवश्य है।

1. **एक जीववादी का परमेश्वर के विषय में क्या विचार है?**
   वह भला है। वह सृष्टिकर्ता है, परन्तु दूर है और मनुष्यों के साथ संबंध नहीं रखता।

2. **एक जीववादी का पाप के विषय में क्या विचार है?**
   सब भला और बुरा दुष्टात्माओं की ओर से है, इसलिए, इसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूं।

3. **एक जीववादी का मनुष्य के विषय में क्या विचार है?**
   मनुष्य निरंतर दुष्टात्माओं के द्वारा काम में लाया जाता है।

4. **एक जीववादी का स्वर्ग के विषय में क्या विश्वास है?**
   उसके विचार से स्वर्ग नहीं है, मात्र कम यातना के स्थान हैं।

5. **एक जीववादी का अनंतकाल के विषय में क्या विश्वास है?**
   वे मृत्यु के बाद के अस्तित्व में, पूर्वजों के साथ विश्राम करने में, विश्वास करते हैं।

6. **क्या जीववाद में दुनिया के अलग-अलग स्थानों के अनुसार कुछ भिन्नता है?**
   अलग-अलग स्थानों में जीववाद की अलग-अलग शब्दावली है और अनेक अलग-अलग मुखिया, अगुवे और पदार्थ या पशुओं की प्रतिमाएं हैं।

7. **मसीही धर्म और जीववाद में मुख्य भिन्नताएं क्या हैं?**
   मसीहियों का विश्वास है कि परमेश्वर भला है, ज्योति है, पवित्र है। जीववादी विश्वास करते हैं कि जीवन भय से भरा, अन्धकारमय और आशाहीन है।

8. एक जीववादी की महसूस की जानेवाली शारीरिक तथा आत्मिक आवश्यकताएं कौनसी हैं?

जीववादियों को भय तथा पशुओं के बलिदान के दासत्व से मुक्त होने की आवश्यकता है। उन्हें आशा प्राप्त करने की आवश्यकता है।

ख. यदि यीशु मसीह की जानकारी हो तो एक जीववादी का उसके विषय में क्या विचार हो सकता है?

जीववादी यीशु मसीह के विषय में नहीं जानते।

मसीहियों के विषय में क्या विचार है?

हो सकता है कि वे मसीहियों से डरेंगे।

<u>जीववादी को सुसमाचार बताते समय करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. जीववादी के सामने मसीह के द्वारा मिलनेवाला छुटकारा प्रस्तुत कीजिए।
2. जीववाद के झूठ का खण्डन सुसमाचार के सत्य से कीजिए। (2 कुरिन्थियों 10:5)
3. अन्धकार तथा अंधविश्वास को परमेश्वर के वचन के प्रकाश से पराजित कीजिए।
4. शैतान के गढ़ों में सक्रिय कलीसियाओं की स्थापना कीजिए। (कुलुस्सियों 2:8)
5. बाइबलीय कथा सुनाने का उपयोग कीजिए।

<u>जीववादी को सुसमाचार बताते समय न करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. शब्दों को समझाने हेतु उसकी परिभाषाओं का उपयोग न कीजिए, बाइबलीय परिभाषाओं का उपयोग कीजिए।
2. उसकी धार्मिक विधियों में उपस्थित मत रहिए।
3. सभ्यता या शिक्षा को उद्धार का स्थान मत दीजिए।
4. जीववादी धारणाओं को सच्चे विश्वास के साथ मत मिलाइए।
5. किसी ओझा की शक्ति पर संदेह मत कीजिए। छुटकारे की किसी भी सेवकाई के दौरान प्रार्थना का संपूर्ण कवच बनाए रखिए।

पुस्तकें:

- *अंडरस्टैंडींग फोक रिलिजन* – पॉल हायबर्ट
- *वर्ल्ड ऑफ द स्पिरिटस्* – डेविड बर्नेट
- *कीज़ टू शेयरींग ख्राइस्ट विद दोज़ ऑफ ट्रायबल् रिलिजन* – ऐन डेनागन
- *विक्टरी ओवर द डार्कनेस* – नील एन्डरसन
- द *बॉन्डेज् ब्रेकर* – नील एन्डरसन
- *हू आइ एम इन ख्राइस्ट* – नील एन्डरसन
- द *मास्टर प्लान ऑफ इवेन्जेलिजम्* – डॉ. रॉबर्ट कोलमेन
- द *मास्टर प्लान ऑफ डिसाइपल्शिप*– डॉ. रॉबर्ट कोलमेन

वेब-साइटस्:

- www.harvestreport.net/tribalreligions.html
- www.DiscountBookSale.com
- www.cmalliance/ministry

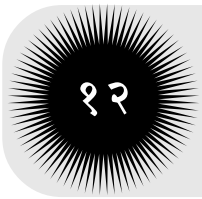

बौद्ध धर्मः एक परिचय

बौद्ध धर्म का सारांश

क. परिभाषा – बौद्ध धर्म गौतम सिद्धार्थ बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है जिन्होंने सिखाया कि जीवन मात्र दु:ख है परन्तु प्रकाशन के मार्ग के द्वारा दु:खमय जीवन को पराजित करते हुए बचा जा सकता है।

1. **एक बौद्ध का परमेश्वर के विषय में क्या विचार है ?**
   उनके पास छोटे ईश्वर हैं परन्तु वे विश्वास करते हैं कि मनुष्य दु:ख सहन करने के द्वारा प्रकाशित (प्रबुद्ध) हो सकता है और इस प्रकार निर्वाण की स्वतंत्र (प्रतिबन्धहीन) शून्यता की ओर बढ़ता है।

2. **एक बौद्ध का पाप के विषय में क्या विचार है?**
   जो कुछ जीवन के लिए हानिकर है उसे, उसके हर एक रूप में, पाप माना गया है।

3. **एक बौद्ध का मनुष्य के विषय में क्या विचार है?**
   मनुष्य एक भौतिक प्राणी के रूप में जन्मा है परन्तु ध्यान तथा पुनर्जन्म के द्वारा वह शून्यता की आत्मिक दशा में विकसित हो जाता है जिसे निर्वाण कहा गया है।

4. **एक बौद्ध का स्वर्ग के विषय में क्या विश्वास है?**
   वे निर्वाण में विश्वास करते हैं जो शून्यता का अंतिम स्थान है। वे बुद्ध की उन शिक्षाओं में विश्वास करते हैं जिन्हें धर्म कहा जाता है, और अनुयायियों को संघ कहते हैं।

5. **एक बौद्ध का अनंतकाल के विषय में क्या विश्वास है?**
   वे निर्वाण में विश्वास करते हैं जो शून्यता की दशा है।

6. **क्या बौद्ध धर्म में दुनिया के अलग-अलग स्थानों के अनुसार कुछ भिन्नता है?**
   प्रत्येक बौद्ध देश या संस्कृति अपनी स्थानीय परिस्थिति के अनुसार अपने में फेर-बदल कर लेती है।

क्या एक बौद्ध को सुसमाचार सुनाने की एक ही पद्धति अनेक देशों में काम आएगी?

हां, परन्तु स्थानीय विशिष्टताओं की ओर ध्यान दीजिए।

7. मसीही धर्म और बौद्ध धर्म में मुख्य भिन्नताएं क्या हैं?

मसीही धर्म परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध की खोज करता है। बौद्ध धर्म शून्यता की ओर ले जानेवाले प्रकाशन की खोज करता है।

8. एक बौद्ध की महसूस की जानेवाली शारीरिक तथा आत्मिक आवश्यकताएं कौनसी हैं?

एक बौद्ध अपने शारीरिक जीवन से शून्यता के प्रकाशन की अवस्था में परिवर्तित होने की इच्छा रखता है जो मध्य मार्ग कहे जानेवाली शारीरिक तथा ज्ञान की पद्धतियों के संतुलित उपयोग के द्वारा प्राप्त की जाती है।

ख. यदि यीशु मसीह की जानकारी हो, तो एक बौद्ध का उसके विषय में क्या विचार हो सकता है?

हो सकता है कि वे यीशु मसीह को एक बुद्धिमान गुरु माने और उसे बहुत-ही अनुकूल दृष्टि से प्रस्तुत किया जा सकता है। नैतिक क्षेत्र में बहुत समानता है।

मसीहियों के विषय में क्या विचार है?

मसीहियों में उनकी रुचि नहीं होती। उनसे बात करते समय, उनकी ओर इशारा करते समय, उन्हें नमस्कार करते समय, उनके बुजुर्गों तथा धार्मिक लोगों के प्रति पूर्ण आदर रखते हुए, अवश्य है कि हम अपना लहजा (स्वर) नम्र बनाए रखें।

<u>एक बौद्ध को सुसमाचार बताते समय करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. यह जान लेने का प्रयास कीजिए कि बुद्ध के विषय में उसकी समझ क्या है ।
2. पुराना नियम के ज्ञान-संबंधी साहित्य का उपयोग कीजिए।
3. पाप के विषय में अधिक न बोलकर, भावनाओं तथा संवेदनाओं के विषय में अधिक बात कीजिए।
4. बौद्ध धर्म की शिक्षा के आठ (अष्टांगिक) मार्ग - सम्यक् ज्ञान, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि - के पहलुओं का उपयोग करते हुए उनका मसीह यीशु में पूरा होना बताइए।

5. उनकी भाषा सीखिए तथा संस्कृति तथा धर्म का ज्ञान प्राप्त कीजिए। बौद्ध धर्म का एक सांस्कृतिक पहलू और अनुवाद का ढंग है।

<u>एक बौद्ध को सुसमाचार बताते समय न करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. उसकी जीवन-पद्धति का अनादर न कीजिए।
2. बौद्ध धर्म का स्पष्टीकरण 1, 2, 3 के क्रम में मिलेगा ऐसी अपेक्षा न कीजिए।
3. आक्रामक मनोभाव या रवैया न दिखाइए।
4. वादविवाद या धर्मों की तुलना मत कीजिए, मसीह के बारे में बताइए।
5. सुसमाचार को अचानक पेश मत कीजिए। घर-घर जाकर सुसमाचार प्रचार मत कीजिए। दीर्घकालीन संबंध बनाइए।

पुस्तकें:

- *जीज़स् इन न्यू एज, दलाई लामा वर्ल्ड* - सेरिंग
- द *स्पिरिट ऑफ बुद्धिज्म्* - डेविड बर्नेट
- *शेअरिंग जीज़स् इफेक्टिवली इन द बुद्धिस्टवर्ल्ड*- लिम्, स्पाउल्डिंग, डी नेउई
- *बुद्धिस्ट-क्रिस्चन डाइलॉग: म्युच्युअल रिन्यूअल एंड ट्रान्सफॉर्मेशन* - पॉल इन्ग्राम एंड फेड्रिक स्ट्रेंग
- *शेंअरिंग योर फेथ विद अ बुद्धिस्ट*- मादासेमी थिरूमलाई

वेब-साइटस्:

- www.truthnet.org
- www.lausanne.org/pattaya-1980/lop-15.html

लेख:

- केथ कैरी द्वारा लिखा गया लेख: *रीचिंग बुद्धिस्ट थ्रू द विज़्डम् लिटरेचर ऑफ दी ओल्ड टेस्टामेन्ट*

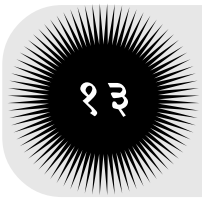

१३ हिन्दू धर्मः एक परिचय

हिन्दू धर्म का सारांश

क. परिभाषा – हिन्दू धर्म अनेक शताब्दियों के अंतराल में विकसित होता गया है। इस तरह इसमें अनेक समूह और बदलाव उत्पन्न हुए। इसके अनुसार, आत्मा अपने कर्मों के अनुसार, पुनर्जन्म के द्वारा तब तक बार-बार जन्म लेती है जब तक वह मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेती जहां से वह पुनः वापस नहीं आती।

1. **एक हिन्दू का परमेश्वर के विषय में क्या विचार है?**
   हिन्दू धर्म में तीन प्रमुख ईश्वर (देव) हैं: ब्रह्मा – सृष्टिकर्त्ता; विष्णु – पालनकर्त्ता; और शिव – संहारक। यह धर्म बहुदेववादी है इसलिए इसमें लाखों देवी-देवता हैं।

2. **एक हिन्दू का पाप के विषय में क्या विचार है?**
   पाप वह काम है जो आपको पुनर्जन्म के चक्र में निम्न स्तर पर ले जाता है। इसमें पापक्षमा, छुटकारा, अनुग्रह या प्रायश्चित्त का प्रावधान नहीं है।

3. **एक हिन्दू का मनुष्य के विषय में क्या विचार है?**
   मनुष्य पुनर्जन्म के चक्र का एक हिस्सा है जिसमें वह श्रेष्ठ और तुच्छ श्रेणी में तब तक जन्म लेता रहता है जब तक वह इस चक्र में पुनः न लौटने के लिए इससे मुक्त नहीं हो जाता।

4. **एक हिन्दू का स्वर्ग के विषय में क्या विश्वास है?**
   इस में स्वर्ग की धारणा ठोस नहीं है, मात्र अस्तित्वहीन हो जाना है।

5. **एक हिन्दू का अनंतकाल के विषय में क्या विश्वास है?**
   एक हिन्दू पुनर्जन्म के चक्र में विश्वास करता है कि उसे इसमें से होकर तब तक जाना है जब तक वह आत्मिक सिद्धता को प्राप्त करके अस्तित्वहीनता के एक ऐसे बिन्दु पर नहीं पहुंच जाता जहां से पुनः वापस नहीं आना है।

6. क्या हिन्दू धर्म में दुनिया के अलग-अलग स्थानों के अनुसार कुछ भिन्नता है?

हिन्दू धर्म के अनेक प्रकार हैं। हिन्दू धर्म में दर्शन-शास्त्र के छः मुख्य दर्शन (षड्दर्शन) हैं: न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, पूर्व-मीमांसा दर्शन, और वेदान्त दर्शन।

क्या एक हिन्दू को सुसमाचार सुनाने की एक ही पद्धति अनेक देशों में काम आएगी?

हां, परन्तु स्थानीय प्रथा/रीति-रिवाजों की ओर ध्यान दीजिए।

7. मसीही धर्म और हिन्दू धर्म में मुख्य भिन्नताएं क्या हैं?

मसीही धर्म में व्यक्तिगत रीति से जाना जानेवाला एक परमेश्वर है, एक पवित्र पुस्तक (बाइबल), एक विश्वास, एक उद्धार, एक पानी का बपतिस्मा, तथा एक स्वर्ग है। हिन्दू धर्म में ये सब एक से अधिक हैं।

8. एक हिन्दू को किन शारीरिक तथा आत्मिक आवश्यकताओं का एहसास होता है?

एक हिन्दू पुण्य कमाना चाहता है, नैतिक-आत्मिक क्षेत्र में अच्छे आचरण से प्राप्त की गई सकारात्मक मानसिक शक्ति को धर्म कहते हैं।

ख. यदि मसीह की जानकारी हो तो एक हिन्दू का उसके विषय में क्या विचार है? मसीहियों के विषय में क्या विचार है?

हो सकता है उन्हें मसीह की जानकारी न हो, और मसीहियों को सताया जाता है - यह सोचते हुए कि उन्हों ने अपने धर्म के साथ धोखा किया और कर्म को निर्बल बना दिया।

<u>एक हिन्दू को सुसमाचार बताते समय करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. वैदिक पुल मसीह में कैसे पूरा हुआ यह सिखाइए।
2. जीवन के दर्शन-शास्त्र की पवित्रता का आदर कीजिए, परन्तु जीवात्मा का नहीं।
3. पुनरुत्थान और पुनर्जन्म के बीच का अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. धर्म के अच्छे कामों को, सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर की जानेवाली मसीही सेवकाइयों के लिए आधार के रूप में प्रयोग कीजिए।
5. यह सिखाइए कि उद्धार विश्वास के द्वारा है कर्मों के द्वारा नहीं।

<u>एक हिन्दू को सुसमाचार बताते समय न करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें</u> -

1. भाग्य या कर्म के विषय में, या हिन्दू धर्म के किसी भी पहलू का, मज़ाक मत उड़ाइए।
2. विश्वासियों को जोखिम में मत डालिए।
3. घर में होनेवाली आराधना को तथा मेलों को (बड़ी संगीत सभाओं को) सुसमाचार प्रचार के लिए उपयोग में लाने से मत हिचकिचाइए। कुछ त्योहारों को भी सम्मेलन तथा प्रार्थना सभाओं के लिए उपयोग में लाइए।
4. पुरानी जाति-प्रथा का सम्मान मत कीजिए। कांग्रेस ने 1950 में वोट देकर उसे अप्रचलित ठहराया है। हर एक व्यक्ति को समान महत्त्व दीजिए।
5. हिन्दू धर्म का स्पष्टीकरण 1, 2, 3 के क्रम में मिलेगा ऐसी अपेक्षा न कीजिए।

पुस्तकें:

- *हिन्दूइज्म्, अ ब्रीफ लूक एट थिऑलाजि, हिस्ट्रि, स्क्रिप्चर्स एंड सोशल सिस्टम् विद कमेन्टस् ऑन द गॉस्पल इन इंडिया* - एच. एल. रिचर्ड

वेब-साइटस्:

- www.lausanne.org/pattaya-1980/lop-14.html
- www.harvestreport.net/hinduism
- www.operationindia.org
- www.geocities.com/gngerald/Hinduism.html

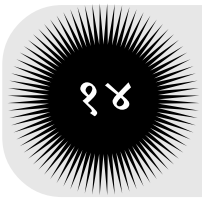

१४ इस्लाम धर्मः एक परिचय

इस्लाम धर्म का सारांश

क. परिभाषा – हजरत मोहम्मद ने इस्लाम की स्थापना की। इस्लाम के पांच धार्मिक कार्य उसके धर्म-स्तम्भ कहे जाते हैं:

(1) कलिमा – विश्वास का अंगीकार – "अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है और मोहम्मद साहब अल्लाह के महान नबी हैं;"

(2) सलात – प्रतिदिन निश्चित समयानुसार पांच बार नमाज पढ़ना, जो शारीरिक शुद्धि एवं आसनों के साथ की जाती है;

(3) ज़कात – दान देना;

(4) रोजे रखना – उपवास – विशेषकर रमज़ान के महीने में;

(5) हज्ज – तीर्थ – मक्का और तथा मदीना की तीर्थ यात्रा।

1. एक मुस्लिम का परमेश्वर के विषय में क्या विचार है?

अल्लाह एक है; अल्लाह सृजनहार है; अल्लाह भला है; अल्लाह व्यक्तिगत नहीं है।

2. एक मुस्लिम का पाप के विषय में क्या विचार है?

प्रत्येक व्यक्ति पाप करता है; इन्हें अच्छे कामों के द्वारा दूर किया जाना अवश्य है; पापक्षमा नहीं है।

3. एक मुस्लिम का मनुष्य के विषय में क्या विचार है?

मनुष्य को पाप के लिए सुधार की आवश्यकता है।

4. एक मुस्लिम का स्वर्ग के विषय में क्या विश्वास है?

प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग जाना चाहता है, परन्तु वहां पहुंचने की गारंटी नहीं है।

5. एक मुस्लिम का अनंतकाल के विषय में क्या विश्वास है?

वह उसे स्वर्ग में बिताने की इच्छा रखता है। उसे उद्धार का कोई आश्वासन नहीं है। वह आशा करता है कि ईश्वर (अल्लाह) उस पर दया करेगा।

6. क्या इस्लाम में दुनिया के अलग-अलग स्थानों के अनुसार कुछ भिन्नता है?

हां, थोड़ी-बहुत भिन्नता है।

क्या इस्लाम के भीतर सम्प्रदाय हैं?

हां, अनेक हैं। जैसे कि: शीअ:, सुन्नी, सूफी, इत्यादि।

क्या एक मुस्लिम को सुसमाचार सुनाने की एक ही पद्धति अनेक देशों में काम आएगी?

हां, परन्तु स्थानीय प्रथा/रीति-रिवाजों की ओर ध्यान दीजिए।

7. मसीही धर्म और इस्लाम में मुख्य भिन्नताएं क्या हैं?

मुस्लिम विश्वास करते हैं कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता था। उनके पास 'अनुग्रह' की धारणा नहीं है; वे विश्वास करते हैं कि वे अपने कामों के द्वारा उद्धार कमाएंगे।

8. सामान्यत: एक मुस्लिम की महसूस की जानेवाली शारीरिक तथा आत्मिक आवश्यकताएं कौनसी हैं?

एक मुस्लिम को चंगाई तथा क्षमा (दोष-मुक्ति) की आवश्यकता होती है। मुस्लिम लोग जानते हैं कि यदि उन्हें चंगाई चाहिए तो उन्हें अपने लिए किसी मसीही व्यक्ति के द्वारा ईसा मसीह से प्रार्थना करवानी होगी। इस्लाम में इसा-अल-मसीह के सिवाय किसी और के द्वारा उद्धार नहीं है।

ख. यदि यीशु मसीह की जानकारी हो तो एक मुस्लिम का उसके विषय में क्या विचार है?

यीशु मसीह का उल्लेख कुरान में एक ऐसे महान भविष्यद्वक्ता के रूप में किया गया है जिसने परमेश्वर की योजना को पूरा किया। वे मात्र उतना ही जानते हैं जो उनके इमाम के द्वारा उन्हें बताया गया है जो प्राय: स्वयं उन बातों को समझ नहीं पाते जो कुरान में इसा-अल-मसीह (यीशु मसीह) के विषय में लिखी हैं। वे यीशु मसीह के पुत्रत्व, ईश्वरत्व, मृत्यु एवं पुनरुत्थान को स्वीकार नहीं करते।

मसीहियों के विषय में क्या विचार है?

उन्हें नास्तिक (अविश्वासी) समझा जाता है, और मुस्लिम विशेषकर उन मसीहियों को नहीं अपनाते जो इस्लाम से धर्म-परिवर्तन किए हुए रहते हैं।

<u>एक मुस्लिम को सुसमाचार बताते समय करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. पवित्र जीवन जीओ। सुसमाचार सुनाने के लिए पुरुषों से पुरुष और महिलाओं से महिला ही बात करें।
2. उनके विश्वास, मोहम्मद तथा कुरान का सम्मान कीजिए।
3. प्रश्न कीजिए, और कहानियों का उपयोग कीजिए।
4. मित्रता स्थापित कीजिए। अपनी बातचीत उन बातों पर केंद्रित कीजिए जिन पर आपसी सहमति हो।
5. अपनी सांस्कृतिक/धार्मिक धारणाओं के विषय में नहीं परन्तु मसीह के विषय में बताइए।

<u>एक मुस्लिम को सुसमाचार बताते समय न करने की पांच अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें -</u>

1. मत पूछिए कि क्या आप उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं, परन्तु पूछिए कि क्या आप उन्हें आशीष दे सकते हैं।
2. उनसे बहस न कीजिए।
3. अपने साथ बाइबल न ले जाइए। यदि वे बाइबल मांगते हैं तो दीजिए।
4. उनसे मित्रता बनाने के लिए दो मिनट से अधिक समय न लीजिए।
5. उनके साथ समूह में बातचीत न कीजिए - एक व्यक्ति के साथ एक जन बात करे यही उत्तम तरीका है।

एक मुस्लिम को सुसमाचार बताते समय प्रभावकारी ठहरनेवाले कुछ बाइबल वचन कौनसे हैं?

- 2 कुरिन्थियों 4:3-6 - हम अपने आपका प्रचार नहीं करते, मसीह का प्रचार करते हैं।
- 2 पतरस 3:9 - न्याय तथा दण्ड का दिन।
- 1 तीमुथियुस 2:3-7 - परमेश्वर की इच्छा है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को जानें।
- प्रेरितों के काम 17:30 - परमेश्वर पापों से मन फिराने की आज्ञा देता है।
- फिलिप्पियों 2:10,11 - सब यीशु के नाम से घुटना टेकें।

कोई किसी मुस्लिम के लिए, जिसे वह मसीह के पास लाने की इच्छा रखता है, कैसे प्रार्थना करें?

- प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपने आप को तथा सत्य को प्रगट करे। वह प्राय: दर्शन में प्रगट होता है।

पुस्तकें:

- *कैमेल ट्रेनिंग मैन्युअल* – केविन ग्रीसन
- *30 डेज़ मुस्लिम प्रेअर फोकस* – WorldChristian.com (annual)
- *इनसाइड इस्लाम* – रेज़ा एफ. साफा
- *जीजस् एंड मोहम्मद* – मार्क गैब्रीयेल
- *सिम्प्ल् ओबीडिअन्स्* –(पार्ट 1) डेविड व्हाइट
- *ब्रिज़ेस् टू इस्लाम* – फिल पार्शल
- *बिल्डिंग ब्रिज़ेस्* – फौड एलियास अक्कैड
- *द क्रेस्न्ट् थ्रू दी आइज़ ऑफ द क्रॉस* – नाबील ज़ब्बोर
- *अ मुस्लिम हार्ट* – एडवर्ड हॉस्कीन्स्

वेब-साइटस्:

- www.newlifeministries-nlm.org/online/muslims.htm
- www.frontiers.org (see especially "Resources")
- www.lausanne.org/pattaya-1980/lop-13.html
- www.lausanne.org/pattaya-1980/lop-49.html
- www.sat7.org

मुस्लिम लोगों में काम करनेवाले समूह:

- फ्रन्टिअर्स् – प्रार्थना करने बुलाए गए
- इन्टरनेशनल टीम्स् – mm.iteams.org / info@iteams.org

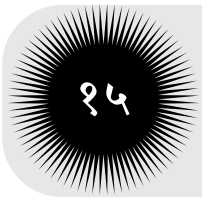

सताव का सामना कैसे करें

स्टीफन लिव्हरसेज़

"*जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे।*" (2 तीमुथियुस 3:12)

पौलुस, तीमुथियुस को लिखे गए अपने दूसरे पत्र में हमें बताता है कि जितने लोग मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे। यीशु ने हमें बताया है कि, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है . . ." (यूहन्ना 16:33ब)। पतरस, अन्याय से दु:ख उठाने के विषय में लिखते समय, यहां तक लिखता है कि, "तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दु:ख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो" (1 पतरस 2:21)।

मैं कुछ दिनों पहले दिल्ली में, सम्पूर्ण भारत से एकत्रित हुए अगुवों के साथ था। प्रार्थना के दौरान, एक व्यक्ति ने परमेश्वर से मांगा कि सताव को भेजे! वह जानता था कि सताव का परिणाम अक्सर बहुतों का उद्धार होता है। उस प्रार्थना का उत्तर भारत में तथा दुनिया के अन्य स्थानों में भी अनेक बार मिला है। प्रति दिन मसीही लोग किसी-न-किसी रूप में सताव का अनुभव करते हैं। हम उसका सामना कैसे करते हैं?

कुछ वर्ष पहले मेरी भेंट एक भूतपूर्व सांसद से हुई। उन्होंने बताया कि भारत के मसीही लोग सताव का सामना तीन प्रकार से कर रहे थे: कानून बनाने की मांग करते हुए; उसके विरोध में प्रदर्शन करते हुए; और उसे स्वीकार करके गले लगाते हुए। उन्हों ने कहा कि तीसरा प्रकार सर्वाधिक प्रभावकारी था।

हम सताव की प्रतिक्रिया कैसे दें इसके विषय में पौलुस स्पष्ट शिक्षा देता है। उसका सूत्र सरल नहीं है, परन्तु अंत में उसका परिणाम सफलता ही होता है - अर्थात् उसके द्वारा लोग मसीह के पास लाए जाते हैं। वह रोमियों 12:9-21 में मसीहियों के लिए आवश्यक बात लिखता है: "बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो" (वचन 9)। वह हमें प्रोत्साहन देता है, "क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो" (वचन 12)। पौलुस इससे अधिक यह भी कह देता है कि

हम अपने सतानेवालों को आशीष दें। बदला लेने का, लोगों ने हम से जो बुरा किया उसके बदले में "जैसे को तैसा" देने का तो विचार भी नहीं आना चाहिए, क्योंकि यह उतना ही गलत होगा जितना कि बुराई का मूल कार्य था। वह अपनी बात हमें यह प्रोत्साहन देते हुए समाप्त करता है कि हम बुराई को बुराई से न जीते, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लें।

क्या इस सब का अर्थ यह निकलता है कि हम सताव की खोज में रहें, नुकसान की ओर दौड़ते रहें? नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि हम सताव की अपेक्षा कर सकते हैं और उसके मध्य आनंदित रह सकते हैं, और हां, हम उस पर विजय पा सकते हैं। एक सिद्ध उदाहरण, सर्वदा के समान, मसीह यीशु है, जिसने अपनी इच्छा से क्रूस को अपनाया, मित्रों तथा विरोधियों के सामने एक अपराधी की मृत्यु मरते हुए सार्वजनिक लज्जा को सह लिया। यहां हम इतिहास की सर्वाधिक बड़ी हार-परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु-को संसार की सब से बड़ी विजय में बदलते हुए देखते हैं जब वह कब्र में से विजयी रीति से जी उठा, उन सब के लिए उद्धार को प्राप्त करते हुए जो उस पर विश्वास करेंगे। वह आज भी इसी रीति से काम करता है, और हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है, जैसे उसने समझा था, कि जिन्हों ने उसे मारा वे लोग ही वह कारण थे जिनके लिए उसने अपना रक्त बहाया और प्राण दिया। इसी प्रकार, जो आज कलीसिया को सताते हैं उन्हें मसीह यीशु की और उद्धार की अत्याधिक आवश्यकता है।

आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर हम पर आनेवाले सताव का उपयोग बहुतों को अपनी ओर लाने के लिए करेगा, यहां तक की, तथा विशेषकर, उन्हें भी जो उसकी निंदा करते हैं और हमारी ओर मुक्के तानते और हमारे विरुद्ध एका करते हैं।

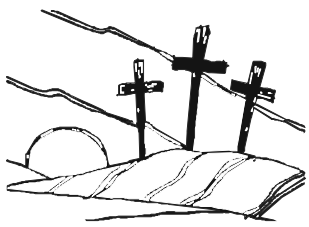

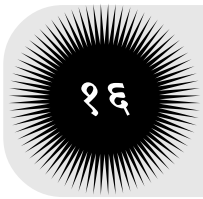

१६ महान आदेश को पूरा करने हेतु कार्य-योजना

अपनी कार्य-योजना की युक्तियों को बनाते समय, दो बातें अवश्य याद रखें:

1. **विभिन्न स्तर** - जिम्मेवारी तथा संयोजन के लिये
2. **विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र** - प्रेरितों 1:8 में उल्लेखित

1 स्तर:

क. व्यक्तिगत - मैं प्रेरितों 1:8 को अपने व्यक्तिगत जीवन में काम में लाने के लिए व्यक्तिगत रूप से कैसे योजना बना रहा हूं? अपने जीवन में प्राथमिकताओं का क्रम निश्चित कीजिए।

ख. परिवार - मेरे पास क्या योजनाएं हैं? क्या मैं प्रेरितों 1:8 को अपने निकटतम् परिवार के लिए वास्तविक बनाने हेतु शिक्षा देता हूं और वैसे ही जीता हूं?

ग. कलीसिया या समूह - प्रेरितों 1:8 के संदर्भ में परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करने या उसकी गवाही देने हेतु मैं अपने सेवकाई-समूह (घरेलू प्रार्थना समूह या 1000 सदस्यों की कलीसिया) की अगुवाई कैसे कर रहा हूं?

घ. डिनॉमिनेशन - परमेश्वर के प्रेम, उसके अनुग्रह तथा उसकी उपस्थिति को 66 अरब लोगों के आगे प्रस्तुत करने हेतु मेरे डिनॉमिनेशन के लिए, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, मेरे पास क्या व्यावहारिक रणनीति है?

ङ. सहायक समूह - मेरा सहायक समूहों के साथ क्या कार्य संबंध है? (जैसे कि - एजुकेशनल रिसोर्सेस, ग्लोबल डे ऑफ प्रेअर, ल्युज़ान कॉन्फरेन्स, बाइबल सोसायटी, इन्टरवर्सिटि, कैम्पस क्रूसेड, नैविगेटर्स,

इवेन्जेलिजम इक्स्प्लोश्न्, ग्लोबल युनिवर्सटि तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय समूह) मैं इन सहायक समूहों के साथ किस प्रकार काम करता हूं ताकि मैं निम्नलिखित बातें पूरी कर सकूं:

- यूहन्ना 3:16 को?
- महान आज्ञा: मत्ती 22:36-40; मरकुस 12:29-31 को?
- महान आदेश: मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:45-49; यूहन्ना 20:21-23; प्रेरितों के काम 1:8 को?

2 क्षेत्रः

क. यरूशलेम - मेरी राजधानी तथा स्थानीय क्षेत्र

ख. यहूदिया - मेरा देश

ग. सामरिया - निकट के पड़ोसी देश या शत्रु

घ. पृथ्वी की छोर - सारे 66 अरब लोग

अवश्य है कि हम यह कार्य-योजना - 5 स्तर तथा 4 क्षेत्र - अपने साथ अपने जीवन भर के लिए, जब तक मसीह यीशु का आगमन नहीं होता या मसीह हमें अपने पास नहीं बुला लेता तब तक के लिए अपना लें।

परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम इस दर्शन को अधिक कार्य करने, जीवित प्रदर्शन करने तथा जीवन पद्धति बनाने के लिए मन में बैठा लें।

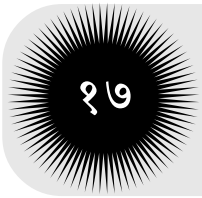

वेब-साइटस्, पुस्तकें और बाइबल वचन

वेब-साइटस्:

1. www.erinfo.org
2. www.er-coursesonline.org
3. www.er-worldonline.org
4. www.globaldayofprayer.com
5. www.globalopps.org
6. www.uscwm.org
7. www.omusa.org/resources
8. www.omsinternational.org/store
9. www.intervarsity.org
10. www.ywam.org
11. www.navigators.org
12. www.navpress.com
13. www.ccci.org (Campus Crusade)
14. www.campuscrusade.com
15. www.truthnet.org
16. www.urbana.org
17. www.lausanne.org
18. www.businessasmission.com
19. www.christiananswers.net
20. www.library.wmcarey.edu
21. www.brigada.org
22. www.biblegateway.com
23. www.newlifeministries.org
24. www.crescentproject.org
25. www.frontiers.org
26. www.findabible.net
27. www.biblegateway.com
28. www.tentmakersinternational.org

आवश्यक पुस्तकें:

1. बाइबल
2. आपरेशन वर्ल्ड - Patrick Johnstone
3. बाइबल शब्दकोश
4. भक्ति में सहायक पुस्तकें/मसीही पत्रिकाएं
5- उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम – ओसवाल्ड चेम्बर्स

पढ़ने के लिए उपयोगी पुस्तकें:

1. मिशनरी जीवनियां
2. Inside Islam – Reza F. Safa
3. Great Commission Companies – Steve Rundle and Tom Steffen
4. Tentmaking – Patrick Lai
5. Culture to Culture: Mission Trip Do's and Don'ts – Nan Leaptrott
6. Gestures – Roger Axtell
7. The Compact Guide to World Religions – ed. Dean Halverson
8. The Bondage Breaker – Neil Anderson
9. Victory Over The Darkness – Neil Anderson
10. Who I Am In Christ – Neil Anderson
11. One Verse Evangelism - Randy Raysbrook
12. Bridge to Life – The Navigators
13. Islam 101 – Lorraine Orris
14. Working your Way to the Nations: A guide to Effective Tentmaking – Jonathan Lewis
15. God's Smuggler – Brother Andrew
16. खोए हुओं के लिए प्रभावी रीति से प्रार्थना करना - ली. ई. थॉमस

कंठस्थ करने के लिए बाइबल वचन:

1. यूहन्ना 3:16
2. मत्ती 7:13-14 - चौड़ा और संकरा मार्ग
3. शब्दरहित पुस्तक के लिये वचन - सुनहरा (यूहन्ना 14:3), काला (रोमियो 3:23), लाल (1 यूहन्ना 1:9), सफेद (प्रकाशितवाक्य 7:14) हरा (2 पतरस 3:8)
4. महान आज्ञा: मत्ती 22:36-40; मर. 12:28-34; लूका 10:25-28; व्यवस्था. 6:5-6
5. महान आदेश: मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:46-49; यूहन्ना 20:20-23; प्रेरितों 1:8; भजन संहिता 2:8
6. प्रार्थना - लूका 11:1, मत्ती 9:37-38, लूका 10:2
7. 1 कुरिन्थियों 10:13
8. फिलिप्पियों 3:10; 4:13
9. यशायाह 54:17
10. जकर्याह 4:6

<u>सेमिनार</u>

आत्मा-बचाने के सात कदम

थेल्मा ब्राउन

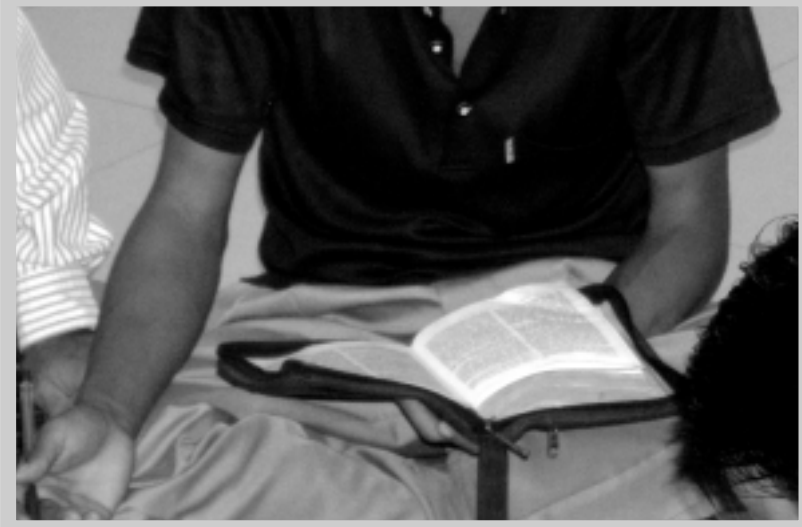

प्रस्तावना पुस्तक तथा एक विशेष पुस्तक

संसार पुस्तकों तथा अध्ययन-पाठ्यक्रमों से भरा हुआ है। बुद्धिमान पुरुष सुलेमान ने इसके विषय में वर्षों पहले अपने दिनों में कहा था, "बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता" (सभोपदेशक 12: 12), और आज यह दुगुना सत्य है क्योंकि आज हमारे पास ज्ञान को बढ़ाने के लिए कम्प्युटर और छापाखाने और अनेक आधुनिक तकनीक हैं।

इन पुस्तकों से प्राप्त अधिकांश शिक्षा उपयुक्त है, क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसा मस्तिष्क दिया है जिसे पोषण की आवश्यकता होती है, अत: इनका विकास होता रहेगा। हमें कहा गया है कि हम अपने आप को परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ठहराने के उद्देश्य से अध्ययन करें (2 तीमुथियुस 2:15)।

परन्तु हमारे पास उपलब्ध पुस्तकें कितनी भी अच्छी क्यों न हों, वे चिरस्थायी नहीं हैं। इनमें से कितनी तो अलग रख दी जाएंगी और खो जाएंगी। बाकी अन्य के पृष्ठ पीले पड़ जाएंगे और भुरभुरे हो जाएंगे और वे फेंक दी जाएंगी। उन पृष्ठों से जो सीखा गया है उसमें से बहुत-से भाग की ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा और अन्तत: उसे भूला दिया जाएगा।

तथापि, एक पुस्तक है जो जीवन की सारी सदियों से होकर कभी समाप्त न होनेवाले अनंत काल तक बनी रहेगी। उसे जीवन की पुस्तक कहा गया है, और इसमें लिखी जानेवाली बात आपके साथ हो सकनेवाली सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। दानिय्येल भविष्यद्वक्ता ने इस पुस्तक में लिखे जाने के विषय में कहा था, *"जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे"* (दानिय्येल 12: 1)। प्रकाशितवाक्य के 21 वे अध्याय में स्वर्ग का वर्णन अद्‌भुत रीति से किया गया है, और जो उसमें प्रवेश करेंगे उनकी सूची वचन 27 में दी गई है, *केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।* आपका नाम उस पुस्तक में लिखे जाने का अर्थ यह होगा कि आप कभी समाप्त न होनेवाले अनन्तकाल के वर्षों में मसीह के साथ जीवित रहेंगे। इसके

विषय में सोचिए! परमेश्वर जो पुस्तक लिख रहा है उसके महत्त्व की तुलना पृथ्वी पर की किसी भी पुस्तक से नहीं की जा सकती।

यदि आपका नाम उस पुस्तक में लिखा गया है, तो आप परमेश्वर द्वारा दिए गए जीवन के उपहार के लिए, अनन्त जीवन के लिए, उसका धन्यवाद कर सकते हैं। वह कितना सर्वोच्च उपहार है! परन्तु यह मात्र आरम्भ है। अब आपके पास एक सौभाग्य है और एक जिम्मेवारी – कि उस उपहार के विषय में अपने परिवार, अपने पड़ोसियों, अपने पूरे समाज को, उस हर एक जन को बताएं जिसका नाम अभी भी उस जीवन की अद्‌भुत पुस्तक में नहीं लिखा गया है। यह आपके करने के लिए एक बुद्धिमानी की बात होगी – "जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीत लेता है" (नीतिवचन 11: 30, *इंडिया बाइबल पब्लिशर्*)। और यह अत्यंत आवश्यक कार्य है, क्योंकि आप उन लोगों को नरक के अनन्तकाल से छुड़ाओगे। परन्तु यह आप कैसे कर सकते हैं?

आपके हाथ में जो पुस्तिका है उसमें सात पाठ हैं जो इस कार्य को कैसे करें यह आपको बताएंगे और वे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे आपके लिए वह मार्ग खोलेंगे जिसके द्वारा आप औरों का जीवन के मार्ग से परिचय कराएंगे। आप उन्हें बताएंगे कि उस अद्‌भुत पुस्तक, जीवन की पुस्तक, में वे अपने नाम कैसे लिखवा सकेंगे। इन पाठों को पढ़िए, उनमें बताई गईं पद्धतियों को सीख लीजिए, और तब उन्हें उपयोग में लाइए।

आप जीवन के पुस्तक में कितनों के नाम लिखवा सकते हैं?

"जो बुद्धिमान है,
वह
आत्माओं को जीत लेता है।"
(नीतिवचन 11: 30)

कदम 1 आत्मा-जीतने के लिए तर्क

थोड़े ही हैं जो प्रचारक होने के लिए बुलाए गए हैं, परन्तु हर एक नया जन्म प्राप्त मसीही आत्मा-जीतनेवाला बनने के लिए बुलाया गया है। अवश्य है कि आत्मा-जीतने के आनन्द में आप अपने लोगों की अगुवाई करें।

"आत्मा-जीतने का कार्य, एक निश्चित व्यक्ति की एक निश्चित उद्धारकर्त्ता को ग्रहण करने के लिए एक निश्चित समय पर अगुवाई करने का एक निश्चित प्रयास है" - बिली सन्डे।

1. आत्मा-जीतनेवाला बनने के लिये तर्क

1. आत्मा का मूल्य - मरकुस 8: 35-38
2. नरक की वास्तविकता - लूका 12: 4-5
3. प्रत्येक पापी के लिए मसीह ने क्रूस पर सही यातनाएँ - 1 पतरस 3: 18
4. इस संसार का खोखलापन और मूर्खता - 1 पतरस 1: 24-25
5. स्वर्ग में अपने परिवार के सारे सदस्य हों ऐसी इच्छा - 1 थिस्सलुनीकियों 4: 16-17
6. स्वर्ग की महिमा - यूहन्ना 14: 2-3
7. विश्वासयोग्य आत्मा-जीतनेवालों को दिए गए व्यक्तिगत पुरस्कार - दानिय्येल 12: 3

2. व्यक्तिगत कार्यकर्ता के लिए आवश्यक बातें

1. अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाया हुआ हो और अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो - 2 पतरस 1:10-11
2. अवश्य है कि वह शुद्ध पवित्र जीवन व्यतीत करे - 2 पतरस 3:14
3. अवश्य है कि वह प्रेम की आत्मा में कार्य करे - 1 पतरस 1: 22-23

4. अवश्य है कि उसे बाइबल का उपयुक्त ज्ञान तथा उसे उपयोग में लाने की जानकारी हो - 2 तीमुथियुस 2: 15
5. अवश्य है कि वह प्रार्थना करनेवाला जन हो - इफिसियों 6: 18
6. अवश्य है कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो - इफिसियों 5: 18
7. अवश्य है कि उसमें खोई हुई आत्माओं के लिए दया/करुणा हो - यहूदा 23

चर्चा - ऊपर लिखी प्रत्येक आवश्यकता क्यों महत्त्वपूर्ण है?

कदम 2 गवाही कैसे दें

बहुत-से लोग गलती से यह विश्वास करते हैं कि गवाही देने के सुअवसर संयोगवश आते हैं। हमारा प्रभु नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन-फिराव का अवसर मिले (2 पतरस 3: 9 ब)। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक को सुसमाचार का सन्देश सुनने का सुअवसर मिले। यह ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक विश्वासी को पहले से तैयार रहना चाहिए कि जब परमेश्वर कि ओर से अवसर मिले तो गवाही दे।

1. **गवाही कैसे दें** -
    1. मसीह के गवाह के लिए अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाया हुआ हो - रोमियों 5: 9-11
    2. अपने मन-परिवर्तन और अपने जीवन में आए बदलाव की सरल सच्चाइयों को बताइए - भजन संहिता 51: 12-13 (क्रमांक 3 देखिए)।
    3. अपनी प्रार्थनाओं के मिले उत्तरों को बताइए - भजन 50: 15
    4. बताइए कि किस प्रकार मसीह आपको सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है - भजन संहिता 107: 8-9
    5. पाप और परीक्षाओं पर पाई गई व्यक्तिगत विजय के विषय में बताइए - 1 यूहन्ना 5: 4-5
    6. अपने मन-पसन्द बाइबल पदों के विषय में बताइए और यह कि किस प्रकार आज प्रात: पवित्र-शास्त्र के विशिष्ट हिस्से के द्वारा परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है।
    7. अपने मित्रों को मसीह यीशु का सुसमाचार दीजिए। उन्हें मसीह यीशु के विषय में बताइए? - रोमियों 1: 16

2. **यीशु मसीह को स्वीकार करने में रुकावटें** -
    1. मनुष्य का भय - 2 तीमुथियुस 1: 7; 1 यूहन्ना 4: 18; फिलि.4: 13
    2. लज्जित होना - 2 तीमुथियुस 1: 8
    3. अपवित्र जीवन - 1 यूहन्ना 1: 9

नोट : गवाही न देने के कारण उत्पन्न होनेवाले खतरे के विषय में जानने हेतु यहेजकेल 33:8 पढ़िए।

3. अपनी व्यक्तिगत गवाही तैयार कीजिए

गवाही देने के अत्यधिक प्रभावशाली साधनों में से एक आपकी अपनी गवाही है कि मसीह के साथ आपका संबंध क्या है तथा उसके कारण आपके जीवन पर क्या प्रभाव हुआ है। अपनी चंगाई के बाद अन्धे व्यक्ति ने धार्मिक अगुवों को गवाही दी कि 'मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अन्धा था और अब देखता हूँ' (यूहन्ना 9: 25 ब)। कुछ लोग धर्मशास्त्र पर आपत्ति करेंगे, इस इच्छा से कि सिद्धान्त या किसी दृष्टिकोण पर वाद-विवाद करें, परन्तु मसीह द्वारा परिवर्तित जीवन की गवाही का खण्डन करना कठिन होता है।

आपकी व्यक्तिगत गवाही में तीन भाग होने चाहिए:

1. **मसीही बनने के पहले आपका जीवन कैसा था** - मसीह के पास आने के पहले आपका जीवन कैसा था इसका वर्णन कीजिए। विशेषत: खोखलेपन तथा निराशा की भावनाओं की ओर खास ध्यान देते हुए, जो अविश्वासियों में सामान्यत: पाई जाती हैं। यह निश्चित करें कि किसी पाप के विषय में बहुत अधिक जोर देकर नहीं बताएंगे ताकि पापमय जीवन की बड़ाई न हो।

2. **आपने यीशु के विषय में कब और कहाँ सुना और आपने उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने का निर्णय क्यों लिया इसका वर्णन कीजिए।** जब आप इस बात का वर्णन करेंगे कि आप किस प्रकार कायल हुए थे, तो प्रार्थना कीजिए कि जिसे आप गवाही दे रहे हैं उसके भी जीवन में पवित्र आत्मा काम करे, उसमें पश्चात्ताप तथा पाप के प्रति खेद की आत्मा उत्पन्न करे।

3. **मसीही होने के बाद से आपका जीवन कैसे परिवर्तित हुआ है यह बताइए।** स्वर्ग के राज्य के नागरिक होने के कारण आपको जो आनन्द तथा शान्ति मिलती रहती है उसके विषय में बताइए। परमेश्वर ने आपके जीवन में जो परिवर्तन लाया है उसके विषय में विशिष्ट रीति से बताइए।

4. **बाइबल के पद का उपयोग कीजिए।**

अभ्यास-कार्य - उपरोक्त प्रत्येक बिन्दु पर संक्षिप्त परिच्छेद लिखिए। परमेश्वर से पूछिए कि आपकी गवाही कैसे अत्यंत प्रभावकारी हो सकती है।

कदम 3 चार आत्मिक नियम

जिस प्रकार भौतिक नियम होते हैं जो भौतिक जगत को निर्धारित करते हैं, उसी प्रकार आत्मिक नियम होते हैं जो लोगों के परमेश्वर से संबंध को निर्धारित करते हैं। सुसमाचार-प्रचार की यह विधि चार नियमों को सिखाती है और सुननेवालों को सुअवसर प्रदान करती है कि वे अपनी प्रतिक्रिया पर विचार करें। इन नियमों को उसी क्रम में बताना चाहिए जैसे वे नीचे लिखे गए हैं, क्योंकि प्रत्येक अगला नियम पहले पर आधारित है। दिए गए शास्त्र-भागों को आपकी बाइबल में चिन्हित कर लेने से उन वचनों को आसानी से खोलने में सहायता होगी।

चार आत्मिक नियम

1 **परमेश्वर आपसे प्रेम करता है** और आपके जीवन के लिए अद्‌भुत योजना प्रस्तुत करता है (यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 10:10)।

2 **मनुष्य पापी है और परमेश्वर से अलग कर दिया गया है।** अत: वह परमेश्वर के प्रेम तथा अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को जान नहीं सकता और अनुभव नहीं कर सकता (रोमियों 3:23; रोमियों 6:23)।

3 **यीशु मसीह ही वह एकमात्र प्रबन्ध है जो परमेश्वर ने मनुष्य की पाप-क्षमा के लिए किया है।** उसके द्वारा आप परमेश्वर के प्रेम तथा आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं (रोमियों 5:8; 1 कुरिन्थियों 15:3-6; यूहन्ना 14:6)।

4 **अवश्य है कि हम व्यक्तिगत रीति से यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करें;** तब हम परमेश्वर के प्रेम तथा हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं (यूहन्ना 1:12; इफिसियों 2:8-9; यूहन्ना 3:18; प्रकाशितवाक्य 3:20)।

अभ्यास-कार्य - इन चार आत्मिक नियमों को याद कीजिए और अपने सहपाठी के सम्मुख उसे प्रस्तुत करने का अभ्यास कीजिए।

कदम 4 — उद्धार का रोमी रास्ता

रोमियों की पुस्तक के वचनों का उपयोग करते हुए उद्धार के रास्ते का स्पष्टीकरण किया जा सकता है। चार आत्मिक नियमों के समान ही रोमी रास्ते को भी दिए गए क्रम में ही बताया जाना चाहिए। इन वचनों को आपकी बाइबल में चिन्हित कर लेना सहायक होगा। सुसमाचार सुनाने की इस पद्धति का मुख्य लाभ यह है कि सारे वचन एक ही पुस्तक में पाए जाते हैं जिस के कारण उन्हें खोजना सरल और सहज होता है। जब आप चौथा बिन्दु बता देते हैं, सुननेवाले से यह अनुरोध करते हुए पूरा करना निश्चित करें कि क्या वह मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करना पसंद करेगा।

उद्धार का रोमी रास्ता

1 **मनुष्य की आवश्यकता** - (रोमियों 3:23), सब ने पाप किया है और सब को पाप-क्षमा की आवश्यकता है।

"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

2 **पाप का दण्ड** - (रोमियों 6:23), पाप का दण्ड मृत्यु है।

"पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

3 **परमेश्वर का प्रबन्ध** - (रोमियों 5:8), परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा पाप का दण्ड चुकाने का मार्ग उपलब्ध कराया है।

"परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।"

4 **मनुष्य का प्रत्युत्तर** - (रोमियों 10:9), पापों को मान लीजिए, मसीह में विश्वास कीजिए, और पाप-क्षमा प्राप्त कीजिए।

"यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।"

अभ्यास-कार्य - इन चार वचनों को अपनी बाइबल में चिन्हित कीजिए और उन्हें याद कर लीजिए।

कदम 5

पांच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार

सुसमाचार-प्रचार की इस सरल पद्धति के लिए किसी विशेष साधन या पुस्तकों की आवश्यकता नहीं होती। एक हाथ की उँगलियों का प्रयोग करते हुए उद्धार की योजना का स्पष्टीकरण किया जाता है। इस पद्धति के लिए आवश्यक होता है कि आप उपयोग में लाए जानेवाले वचनों को कण्ठस्थ कर लें, परन्तु यह पद्धति इतनी व्यावहारिक होती है कि आप सुसमाचार बताने के लिए सर्वदा तैयार होते हैं। यदि सुननेवाला इच्छुक जान पड़ता है, और यदि ऐसा करना उचित लगता है, तो आप उसका हाथ पकड़कर प्रत्येक उँगली को संकेत करते हुए उसका अर्थ बता सकते हैं।

पांच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार

1 **पहली उँगली - परमेश्वर आपसे प्रेम करता है** (यूहन्ना 3:16)।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

2 **दूसरी उँगली - सबने पाप किया है** (रोमियों 3:23)।

"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

3 **तीसरी उँगली - यीशु मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपने प्राण दिए** (1 कुरिन्थियों 15:3,4)।

"पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।"

4 **चौथी उँगली –** **विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा** (यूहन्ना 1:12)।

"जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"

5 **पाँचवी उँगली –** **जब आप यीशु में विश्वास करते है, तब आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं** (रोमियों 6:23)।

"पाप की मजदूी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

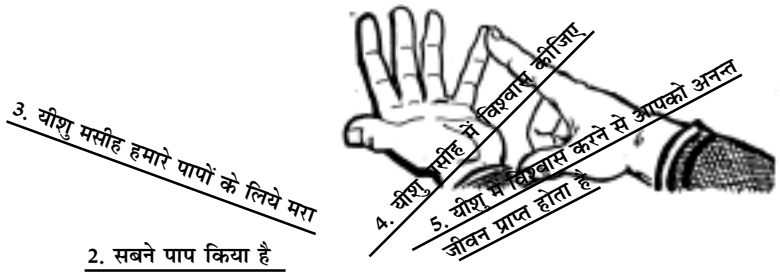

कदम 6 रेखांकित किया हुआ नया नियम

रेखांकित किया हुआ नया नियम एक उत्तम माध्यम होगा कि आप किसी को अपने साथ उद्धार के विषय पर चुने हुए पद पढ़वाएँ, क्योंकि हो सकता है कि वह खोजी व्यक्ति उन पदों को रेखांकित करने के लिए किए गए आपके कष्ट की सराहना करें। आप ऐसा भी कर सकते हैं कि वह बाइबल उस व्यक्ति के हाथ में दें जिसे आप सुसमाचार सुना रहे हैं, और उससे अनुरोध करें कि लगाए गए फीतों को क्रमानुसार खोलें। इस बाइबल को तैयार करने की पद्धति नीचे दी गई है। आप इसे अपने पसंदीदा वचनों को लेकर भी बना सकते है, परन्तु निश्चित करें कि वे 6 से अधिक न हों ताकि बताने का काम अत्यधिक उलझा हुआ न हो जाए।

रेखांकित किया हुआ नया नियम

1 फीते पर संख्या '1' लिखकर उसे पहले वचन, रोमियों 3:23, के पृष्ठ के ऊपरी हिस्से पर लगाइए। उस पद को एक रंगीन कलम से रेखांकित कर देने से उसे ढूँढ़ने में आसानी होगी।

2 पृष्ठ के हाशिए में लिखिए: "क्रमांक '2' के लिए पृष्ठ संख्या . . . देखें" . . . पर आपके बाइबल में रोमियों 6:23 के लिये जो पृष्ठ है उसकी संख्या लिखिए जहाँ आपने दूसरा फीता लगा रखा हो।

3 आगे दिए गए पदों के लिए इसी प्रकार करते जाइए, हर एक पद को समझाइए – यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 1:9; प्रकाशितवाक्य 3:20; 1 यूहन्ना 5:10-13

अभ्यास-कार्य – फीते लगाया गया नया नियम तैयार कीजिए और अपने सहपाठी के साथ सुसमाचार बताने का अभ्यास कीजिए।

कदम 7 शब्द-रहित पुस्तक

आप अपनी बाइबल तथा इस अद्‌भुत छोटी पुस्तक के द्वारा किसी को भी सुसमाचार बता सकते हैं। सुननेवाले व्यक्ति को आपके साथ बातचीत में भाग लेने दीजिए। वाक्यांशों में दिए गए पदों के हवाले आपके अध्ययन के लिए हैं। कुछ पद गवाही के दौरान उपयोग में लाने हेतु दिए गए हैं। कोष्ठक ( ) में दिए गए निर्देश आपकी सहायता करेंगे। अपना परिचय देते हुए वार्तालाप आरम्भ कीजिए। उस का नाम भी पूछ लीजिए ताकि वार्तालाप के दौरान आप उसे नाम लेकर सम्बोधित कर सकें। इस कथा को निश्चित रूप से उत्साहपूर्वक बताइए। यह आपके सुननेवाले के लिए उद्धार का मार्ग है।

शब्द-रहित पुस्तक

श्रेष्ठ कहानी

क्या आपने कभी शब्द-रहित या चित्र-रहित पुस्तक देखी है? (पृष्ठों को पलटते हुये रंगों को दिखाइए।) रंगीन पृष्ठों की यह पुस्तक बाइबल से एक अद्‌भुत कहानी सुनाती है जो उस सच्चे और जीवित परमेश्वर के विषय में है जिसने जगत की रचना की है। मैं इस पुस्तक को शब्द-रहित पुस्तक कहता हूँ। प्रत्येक रंग मुझे कहानी के एक भाग को स्मरण दिलाता है। क्या आप इसे सुनना पसंद करेंगे? (उसके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।)

सुनहरा पृष्ठ खोलिए

(अनुभव से देखा गया है कि सुनहरे पृष्ठ से, परमेश्वर के प्रेम पर जोर देते हुये, आरम्भ करना बुद्धिमानी है।)

यह सुनहरा पृष्ठ मुझे स्वर्ग का स्मरण दिलाता है। क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग क्या है? (प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।) स्वर्ग परमेश्वर का निवास-स्थान है। बाइबल हमें बताती है कि स्वर्ग में नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की है (प्रकाशितवाक्य 21:21)। परमेश्वर हमें अपने निवास-स्थान के विषय में अनेक

बातें बताता है। वहाँ कोई कभी बीमार नहीं होता। कोई कभी मरता नहीं। वहाँ रात नहीं है। स्वर्ग में हर एक जन पूर्णत: आनन्दित होगा-सर्वदा (प्रकाशितवाक्य 21:4-23)। स्वर्ग की सर्वाधिक अद्‌भुत बात यह है कि वहाँ परमेश्वर पिता और उसका पुत्र प्रभु यीशु हैं।

परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना की। उसने आपको भी बनाया, और वह आप से अत्यधिक प्रेम करता है। बाइबल कहती है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा . . ." (यूहन्ना 3:16)। इसका अर्थ यह हुआ कि वह प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है - इसमें आप और मैं भी सम्मिलित हैं। इसलिए कि परमेश्वर ने आपको बनाया और आप से प्रेम करता है, वह चाहता है कि आप उसके परिवार के सदस्य बनें और किसी दिन उसके साथ स्वर्ग में हों (यूहन्ना 14:2)। स्वर्ग कैसा विशेष स्थान है! वह एक सिद्ध स्थान है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध है। परन्तु एक बात है जो स्वर्ग में कभी भी नहीं हो सकती।

काला पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग सुननेवाले की आत्मिक आवश्यकताओं पर जोर देने के लिये कीजिए।)

वह एक बात पाप है। यह काला पृष्ठ मुझे पाप का स्मरण दिलाता है। इसलिए कि आप और मैं पापी हैं, हम परमेश्वर की नहीं परन्तु अपनी इच्छा से चलना चाहते हैं। अपनी इच्छा से चलने की चाहत पाप है। गंदी बातें करना, या बोलना या सोचना पाप है। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में जो नियम दिए हैं उनका पालन न करना पाप है। पाप के कारण हमारे संसार में दु:ख होता है। क्या आप उन कुछ बातों के विषय में बता सकते है जो पाप हैं? (प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।) क्या आप जानते हैं कि आप पापी हैं? परमेश्वर का वचन कहता है, "क्योंकि सब ने पाप किया है" (रोमियों 3:23)। सब का अर्थ हुआ हम में से प्रत्येक जन, जिसमें आप और मैं भी सम्मिलित हैं। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध रूप से सही है - उसमें कुछ भी पाप नहीं। परमेश्वर जहाँ है वहाँ वह पाप की अनुमति नहीं दे सकता।

परमेश्वर ने कहा है कि पाप का दण्ड मिलना अवश्य है। पाप का दण्ड मृत्यु है - अर्थात् परमेश्वर से सर्वदा के लिए अलग कर दिया जाना (रोमियों 6:23)। परमेश्वर जानता था कि ऐसी कोई भी बात नहीं है जिसे करने से आप पाप से छुटकारा पा सकते हैं। वह जानता था कि आप उसे प्रसन्न करने योग्य कुछ भी भलाई

नहीं कर सकते हैं। परन्तु वह आप से प्रेम करता है और चाहता है कि आप उसकी संतान बनें। इसलिए उसने एक मार्ग तैयार किया कि आपको पापों की क्षमा मिले।

लाल पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग, यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार का मार्ग कैसे संभंव हुआ है इसके महत्व को बताने के लिये कीजिए।)

लाल रंग उस एक मार्ग को दर्शाता है। परमेश्वर आप से बहुत अधिक प्रेम करता है। उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर भेजा। उसने एक बालक के रूप में जन्म लिया। वह बढ़ता गया और एक मनुष्य बना। यीशु उस हर एक व्यक्ति से भिन्न था जिसने इस पृथ्वी पर जीवन बिताया। यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया। वह सिद्ध -पवित्र- है।

परन्तु एक दिन, दुष्ट लोगों ने उसके सिर पर काटों का मुकुट रखा और उसे कीलों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया। बाइबल बताती है कि जब वह वहाँ चढ़ाया गया तब परमेश्वर ने हम सब के पापों को उसके ऊपर रखा (यशायाह 53:6)। आपका सब क्रोध, आपके सारे झूठ और आपकी सारी अधमता-आपके सारे पापों को परमेश्वर के पुत्र पर रख दिया।

जब यीशु को कीलों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया, उसके हाथ और पावों से क्या बहा? (लहू।) बाइबल बताती है कि लहू बहाए बिना पाप-क्षमा नहीं है (इब्रानियों 9:22)। आपके पापों के लिए आपको मिलनेवाले दण्ड को यीशु ने सह लिया। उसने इतना सबकुछ सहा! तब उसने ऊँचे शब्द से कहा, "पूरा हुआ।" प्रभु यीशु पृथ्वी पर आया था कि हमारे पापों के दण्ड को सह ले। और उसने उस कार्य को पूरा किया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिए। बाइबल बताती है, "यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया" (1 कुरिन्थियों 15:3)। परन्तु तीन दिनों के बाद सब से अधिक अद्‌भुत बात घटी। परमेश्वर ने उसे पुन: जीवित कर दिया। उसने मसीह यीशु को मृत्यु में से जीवित किया। यीशु जीवित उद्धारकर्त्ता है (1 कुरिन्थियों 15:4)। वह - आपको आपके पापों से उद्धार देने के लिए - आपका उद्धारकर्त्ता बनना चाहता है।

(निर्णय लेने और निमंत्रण की प्रार्थना करने कहिए।)

सफेद पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग सुननेवाले के प्रत्युत्तर पर - यीशु में अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में विश्वास करने पर - जोर देने के लिये कीजिए।)

यह पृष्ठ मुझे स्मरण दिलाता है कि आप अपने पापों से शुद्ध किए जा सकते हैं (भजन संहिता 51:7)। इसके विषय में परमेश्वर ने हमें बाइबल में बताया है। (उस व्यक्ति को आपके साथ यह वचन पढ़ने दीजिए।) "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" हाँ, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। परमेश्वर कहता है कि यदि आप यीशु में विश्वास करेंगे तो आप नाश नहीं होंगे -आप परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग नहीं किए जाओगे। वह आपके पापों को क्षमा करेगा और आपको परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध करेगा। परमेश्वर कहता है, "जो कोई विश्वास करे।" हम "जो कोई" के स्थान पर आपका नाम रख सकते हैं। यदि आप यीशु में विश्वास करते हैं कि वह उद्धारकर्त्ता है, तो वह आपको अनन्त जीवन देगा। यही वह जीवन है जिसकी आपको आवश्यकता है कि आप स्वर्ग में परमेश्वर के साथ जी सकें। यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं कि वह आपका उद्धारकर्त्ता है तो वह आपके पापों को क्षमा करेगा, और वह आपके साथ सर्वदा रहेगा और आपको सामर्थ्य देगा कि आप परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें। आप आज यीशु को बता सकते हैं कि आपने पाप किया है, और आप विश्वास करते हैं कि उसने आपके लिए अपने प्राण दिए। बाइबल कहती है कि यदि आप पश्चात्ताप करते हैं, अर्थात् अपने पापों से मन फिराते हैं, तो वे मिटाए जा सकते हैं (प्रेरितों के काम 3:19)। बाइबल यह भी बताती है कि यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तो आप उद्धार पाओगे (प्रेरितों के काम 16:31)। क्या आप यह अभी मेरे साथ करना चाहेंगे? (यदि उत्तर हाँ है तो सुननेवाले के साथ प्रार्थना कीजिए कि वह मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करे।)

हरा पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ पर आत्मिक वृद्धि के विषय में बल देकर बताइए।)

हरा रंग मुझे उन वस्तुओं का स्मरण दिलाता है जो वृद्धि करती हैं, जैसे कि पत्तियाँ, घांस, फूल और वृक्ष। यह पृष्ठ मुझे नये जीवन का, अनन्त जीवन का स्मरण दिलाता है जिसे आपने परमेश्वर से पाया है। जब आप प्रभु यीशु पर अपने पापों से

उद्धार करनेवाले के रूप में विश्वास करते हैं, तब आप परमेश्वर के परिवार में एक नये जन्मे बालक के समान हैं। परमेश्वर चाहता है कि आप का विशेष रूप से विकास हो। बाइबल आपसे कहती है, "प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के . . . पहचान में बढ़ते जाओ" (2 पतरस 3:18)।

जैसे-जैसे आप बाइबल से यीशु मसीह के विषय में अधिकाधिक जानते जाएंगे, आप जान लेंगे कि पाप से कैसे दूर रहना है (भजन संहिता 119:11)। प्रतिदिन उससे माँगिए कि वह आपकी सहायता करे कि आप उसकी आज्ञा का पालन करें। यदि कभी आप से पाप हो भी जाए, तो परमेश्वर से कहिए कि आपने पाप किया है। वह तुरन्त आपको क्षमा करेगा। बाइबल कहती है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। उससे प्रार्थना कीजिए कि आपकी सहायता करे कि आप उस गलत बात को पुन: न करें। (उस व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह परमेश्वर को उसकी सहायता की प्रतिज्ञा के लिए धन्यवाद दे।)

1. **परमेश्वर से बात कीजिए** - प्रार्थना कीजिए (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। बाइबल कहती है कि हम निरन्तर प्रार्थना में लगे रहें।
2. **परमेश्वर की बात सुनिए** - पढ़ने तथा कण्ठस्थ करने के द्वारा परमेश्वर का वचन सीखिए (भजन संहिता 119:11)।
3. **परमेश्वर के लिए बात कीजिए** - औरों को उसके विषय में बताइए, गवाही दीजिए (मरकुस 16:15)।
4. **परमेश्वर की आराधना कीजिए** - सन्डे स्कूल तथा कलीसिया की आराधना में जाइए (इब्रानियो 10:25)।

इसके पहले कि वह व्यक्ति जाए,

1. उसे कोई पर्चा (ट्रैक्ट) या पत्राचार पाठ्यक्रम दीजिए।
2. उससे प्रार्थना करवाइए जिसमें वह प्रभु यीशु मसीह का उन बातों के लिए जो उसने उसके लिये की हैं धन्यवाद करेगा।
3. उसके लिए प्रार्थना कीजिए।
4. आगे सम्पर्क बनाए रखने के लिए उससे अनुरोध कीजिए कि वह अपना नाम और पता आपको दे।

(शब्द-रहित पुस्तक के निर्देश *चाइल्ड इवेन्जेलिझ्म फेलोशिप* की सौजन्य से)

3 मित्र मुहिम

व्यक्तिगत

परमेश्वर के समर्पित एवं
उत्साही लोगों को, जो इस उद्देश्यपूर्ण
वाचा पर हस्ताक्षर करते हैं कि वे 3 मित्रों को मसीह यीशु के शिष्य बनाएंगे, निम्नलिखित सुझाव दिए जाते हैं:

1. प्रार्थना में समय दीजिए कि मसीह यीशु के शिष्य बनाने के लिए किन्ही 3 व्यक्तिओं का चुनाव करने में परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त करें।
2. चुने गए व्यक्तियों में से प्रत्येक के उद्धार के लिए प्रतिदिन अनेक बार आग्रह की प्रार्थना कीजिए। परमेश्वर से अगुवाई मांगिए कि उन्हे सुसमाचार बताने की योजना कैसे बनाएं।
3. प्रार्थना कीजिए कि उन्हें परमेश्वर की संपूर्ण मनसा बताने के लिए आपको पवित्र साहस और ऐसा ईश्वरीय प्रेम दिया जाए कि आपका संदेश उन उद्धार न पाए हुए मित्रों को मधुर लगे।
4. विश्वास और धीरज से परिपूर्ण रहिए। उन तीन मित्रों से भेंट कीजिए। उन पर अपना प्रेम प्रगट कीजिए। उन्हें चर्च आने का निमंत्रण दीजिए। आज अपने दिनों में परमेश्वर जिन महान कामों को कर रहा है उनका वर्णन कीजिए। उनके साथ बने रहिए। निश्चित कर लीजिए कि सुसमाचार का बीज उनके मनों में अच्छे से बोया गया है। तब विश्वासयोग्यता से, प्रेमपूर्वक, उद्देश्यपूर्ण प्रार्थना करते रहिए और अपने दृष्टि से उस लक्ष्य को दूर न होने दीजिए कि वे उद्धार प्राप्त करने की प्रार्थना करेंगे।

प्रभु मैं स्वीकार करता हूं –

- कि तू ने मेरे पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए–और मेरे मित्रों के पापों के लिए भी! (*जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।–रोमियों 5:8*)
- कि जब मैं ने तुझ में विश्वास किया तब तूने मेरा उद्धार किया–और जब मेरे मित्र तुझ में विश्वास करेंगे तब तू उनका भी उद्धार करेगा। (*देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा। –प्रका. 3:20*)
- कि मैं तेरे पास आया क्योंकि किसी ने मेरे जीवन में सुसमाचार का बीज बोया और उसे सींचा–इसी प्रकार मेरे मित्र भी तेरे पास आएंगे जब कोई उनके जीवन में सुसमाचार का बीज बोएगा और उसे सींचेगा। (*मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।–1 कुरिन्थि. 3:6*)
- कि तू ने मेरा उद्धार किया है ताकि मैं अपने मित्रों को उद्धार के पास लाऊं, तेरे शिष्य बनाऊं। (*मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल लाओ।–यूहन्ना 15:16*)
- कि मुझे इस काम को तुरन्त आरंभ करना चाहिए कि मैं अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करूं, उनसे मिलने, उन्हें जानने, उन्हें सिखाने और उन्हें विश्वास में लाने की योजना बनाऊं ताकि उन्हें मसीह यीशु के शिष्य बनाऊं। (*वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।–यूहन्ना 9:4*)
- कि मैं तेरे प्रति विश्वासयोग्य रहूं और अभी इसी समय तुझ से यह वाचा बांधू कि 3 मित्रों को तेरे पास लाने, उन्हें तेरे शिष्य बनाने की व्यक्तिगत मुहिम आरंभ कर दूं। पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए, मैं अपने इस निश्चित उद्देश्य की घोषणा करता हूं कि उनके हृदय में सुसमाचार का बीज बोऊंगा, प्रार्थना के द्वारा उसे सीचूंगा और अपने प्रेम के द्वारा उन्हें तुझ तक लाऊंगा कि उन्हें तेरे शिष्य बनाऊं। इस उद्देश्यपूर्ण कार्य को पूरा करने की मैं प्रतिज्ञा करता हूं।

हस्ताक्षर ..... दिनांक .....

- **तीन मित्र जिन्हें मैं मसीह यीशु के शिष्य बनाना चाहता हूं:**

1. _____
2. _____
3. _____